नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 160
दि. 15.03.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

170 दिन बाद रिहा हुए सोनम वांगचुक, केंद्र ने हटाया एनएसए जोधपुर जेल से बाहर आते ही खत्म हुई लंबी हिरासत

जोधपुर। लद्दाख के सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षाविद Sonam Wangchuk को करीब 170 दिनों की हिरासत के बाद जोधपुर सेंट्रल जेल से रिहा कर दिया गया। केंद्र सरकार ने उनके खिलाफ लगाया गया National Security Act (एनएसए) हटाने का फैसला लिया, जिसके बाद उनकी तत्काल रिहाई का रास्ता साफ हो गया। सरकार के इस फैसले के साथ ही पिछले कई महीनों से जारी विवाद और कानूनी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अध्याय समाप्त हो गया। वांगचुक को सितंबर 2025 में लद्दाख में हुई हिंसक घटनाओं के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत हिरासत में लिया गया था और तब से उन्हें जोधपुर की जेल में रखा गया था। रिहाई के दिन सुबह से ही जोधपुर सेंट्रल जेल के बाहर हलचल देखने को मिली। वांगचुक को लेने उनकी पत्नी गीतांजलि सुबह करीब दस बजे जेल परिसर पहुंचीं। जेल प्रशासन ने नियमानुसार दस्तावेजी प्रक्रिया पूरी करवाई और आवश्यक औपचारिकताओं के बाद दोपहर के समय वांगचुक जेल से बाहर आए। जेल के मुख्य द्वार से बाहर निकलते समय उनके साथ उनकी पत्नी मौजूद थीं और सुरक्षा के मद्देनजर पुलिस भी तैनात थी। दोनों बाद में एक निजी वाहन से वहां से रवाना हो गए। लंबे समय बाद जेल से बाहर आने के कारण इस रिहाई को लेकर सामाजिक और राजनीतिक हलकों में भी चर्चा तेज हो गई है। सरकार ने यह फैसला उस समय लिया जब इस मामले में सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई की तारीख नजदीक थी। वांगचुक द्वारा दायर याचिका पर 17 मार्च को अंतिम सुनवाई होनी थी, जिसमें अदालत उन वीडियो और तस्वीरों को देखने वाली थी जिनके आधार पर सरकार ने उनके खिलाफ राष्ट्रीय सुरक्षा कानून लागू किया था। केंद्र सरकार ने अदालत को बताया कि एनएसए

हटाने और हिरासत समाप्त करने का निर्णय क्षेत्र में शांति और संवाद का माहौल बनाने के उद्देश्य से लिया गया है। सरकार के अनुसार लद्दाख में विभिन्न समुदायों और सामाजिक संगठनों के साथ लगातार बातचीत की प्रक्रिया चल रही है और क्षेत्र की चिंताओं को दूर करने के लिए उच्च स्तरीय समिति के माध्यम से संवाद जारी रहेगा।

सरकार ने अपने बयान में कहा कि पिछले कुछ महीनों में लद्दाख में चल रहे विरोध प्रदर्शनों और हड़तालों का असर स्थानीय जीवन पर पड़ रहा था। इन आंदोलनों के कारण छात्रों की पढ़ाई, नौकरी की तैयारी कर रहे युवाओं की गतिविधियां, व्यापारिक कामकाज और पर्यटन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र प्रभावित हो रहे थे। स्थानीय अर्थव्यवस्था भी इससे प्रभावित हो रही थी। ऐसे में केंद्र ने माना कि संवाद और शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में आगे बढ़ना जरूरी है। इसी उद्देश्य से एनएसए हटाने का निर्णय लिया गया ताकि सभी पक्षों के बीच बातचीत का रास्ता खुल सके। सोनम वांगचुक को 26 सितंबर 2025 को हिरासत में लिया गया था। इसके एक दिन बाद उन्हें लद्दाख से राजस्थान के जोधपुर सेंट्रल जेल भेज दिया गया था। तब से वे वहीं बंद थे। जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत किसी व्यक्ति को बिना मुकदमे के अधिकतम एक वर्ष तक हिरासत में रखा जा सकता है। वांगचुक इस कानून के तहत लगभग छह महीने की अवधि जेल में बिता चुके थे। उनकी गिरफ्तारी की पृष्ठभूमि 24 सितंबर 2025 को लेह में हुई हिंसक घटनाओं से जुड़ी थी। उस दिन लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और उसे संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया गया था। प्रदर्शन के दौरान स्थिति बिगड़ गई और हिंसा भड़क उठी। इस घटना में 22 पुलिसकर्मियों सहित 45 से अधिक लोग घायल हो गए थे। प्रशासन का आरोप था कि वांगचुक के भाषणों और आह्वान ने प्रदर्शनकारियों को उकसाया, जिसके कारण स्थिति हिंसक हो गई। इसी आधार पर सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से लेह के जिला मजिस्ट्रेट के आदेश पर उनके खिलाफ एनएसए लगाया गया था।

वांगचुक के समर्थकों और कई सामाजिक संगठनों ने उस समय उनकी गिरफ्तारी का विरोध भी किया था। उनका कहना था कि वांगचुक लंबे समय से लद्दाख के पर्यावरण, शिक्षा और स्थानीय अधिकारों से जुड़े मुद्दों पर काम करते रहे हैं और उनका आंदोलन शांतिपूर्ण था। समर्थकों का यह भी तर्क था कि उन्हें देशद्रोही या सुरक्षा के लिए खतरा बताना उचित नहीं है। दूसरी ओर प्रशासन का कहना था कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने और हिंसा की पुनरावृत्ति रोकने के लिए यह कदम उठाना आवश्यक था।

वांगचुक का नाम देश में शिक्षा और सामाजिक सुधार से जुड़े अभियानों के कारण लंबे समय से चर्चा में रहा है। उन्होंने लद्दाख में शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदायों के अधिकारों को लेकर कई पहलें की हैं। उनके कार्यों को लेकर देश और विदेश में भी सराहना होती रही है। इसी कारण उनकी गिरफ्तारी और बाद में एनएसए लगाने के फैसले ने भी व्यापक बहस को जन्म दिया था। फरवरी 2025 में वांगचुक संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित एक पर्यावरण सम्मेलन में भाग लेने के लिए पड़ोसी देश गए थे। उस दौरान उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मंच पर पर्यावरण संरक्षण और हिमालयी क्षेत्रों की संवेदनशीलता जैसे मुद्दों पर अपने विचार रखे थे। उसी यात्रा को लेकर बाद में कई तरह की राजनीतिक और प्रशासनिक चर्चाएं भी सामने आईं। हालांकि वांगचुक ने उस मंच पर भारत और देश के नेतृत्व की भी प्रशंसा की थी।

अब जब 170 दिनों के बाद उनकी रिहाई हो गई है तो इस पूरे घटनाक्रम को लेकर एक नया अध्याय शुरू होता दिखाई दे रहा है। सरकार का कहना है कि लद्दाख के मुद्दों पर संवाद की प्रक्रिया जारी रहेगी और स्थानीय समुदायों की चिंताओं को दूर करने के लिए बातचीत का रास्ता अपनाया जाएगा। वहीं वांगचुक के समर्थकों का मानना है कि उनकी रिहाई से क्षेत्र में तनाव कम होगा और लोकतांत्रिक तरीके से अपनी मांगों को आगे रखने का अवसर मिलेगा।

दो वर्षों में सिमटा हिमालय का हरित आवरण, भारतीय हिमालयी क्षेत्र में वृक्ष क्षेत्र 2.27% घटा

नई दिल्ली। देश के पर्यावरण और पारिस्थितिकी संतुलन के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने जाने वाले भारतीय हिमालयी क्षेत्र में वृक्ष आवरण में चिंताजनक गिरावट दर्ज की गई है। केंद्र सरकार ने संसद में जानकारी दी है कि पिछले दो वर्षों के दौरान इस क्षेत्र में वृक्षों का आवरण घटा है। केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री Kirti Vardhan Singh ने राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में बताया कि वर्ष 2021 से 2023 के बीच भारतीय हिमालयी क्षेत्र में वृक्षों का आवरण लगभग 2.27 प्रतिशत कम हुआ है।

मंत्री ने बताया कि देश में वनों की स्थिति पर तैयार की जाने वाली रिपोर्ट India State of Forest Report 2023 के अनुसार वर्ष 2021 में इस क्षेत्र में वृक्षों का कुल आवरण 15,427.11 वर्ग किलोमीटर था, जो वर्ष 2023 में घटकर 15,075.5 वर्ग किलोमीटर रह गया है। इस प्रकार दो वर्षों में लगभग 351 वर्ग किलोमीटर से अधिक क्षेत्र में वृक्ष आवरण कम हुआ है। यह आंकड़ा हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के सामने मौजूद चुनौतियों की ओर संकेत करता है।

भारतीय हिमालयी क्षेत्र देश के सबसे संवेदनशील पर्यावरणीय क्षेत्रों में से एक माना जाता है। यह क्षेत्र न केवल जैव विविधता का भंडार है, बल्कि यहां से निकलने वाली नदियां करोड़ों लोगों के जीवन और आजीविका का आधार भी हैं। ऐसे में वृक्षों के आवरण में कमी को पर्यावरणविद गंभीर चिंता के रूप में देख रहे हैं।

सरकार के अनुसार भारतीय हिमालयी क्षेत्र में कुल 13 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं। इनमें Jammu and Kashmir, Ladakh, Uttarakhand, Himachal Pradesh, Arunachal Pradesh, Manipur, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Sikkim, Tripura, Assam और West Bengal के पर्वतीय इलाके शामिल हैं। ये सभी क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील हैं और यहां की वन संपदा पूरे हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मंत्री ने यह भी बताया कि भले ही वृक्ष आवरण में कमी आई है, लेकिन हिमालयी क्षेत्र के जंगलों में कुल कार्बन भंडार में मामूली वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2023 में इस क्षेत्र के वनों में कुल कार्बन भंडार 3,273.10 मिलियन टन आंका गया है, जबकि वर्ष 2021 में यह 3,272.68 मिलियन टन था। यह वृद्धि भले ही बहुत छोटी हो, लेकिन इससे यह संकेत मिलता है कि कुछ क्षेत्रों में वन संरचना और घनत्व में सुधार हुआ है।

वनों में कार्बन भंडारण की क्षमता जलवायु परिवर्तन से निपटने में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। पेड़ वातावरण में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर उसे अपने भीतर संग्रहित कर लेते हैं, जिससे ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा कम करने में मदद मिलती है। इस कारण हिमालयी क्षेत्र के जंगल जलवायु संतुलन बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सरकार ने बताया कि देश में वनों से संबंधित आंकड़ों को एकत्र करने और उनका विश्लेषण करने का काम Forest Survey of India द्वारा किया जाता है। यह संस्था नियमित अंतराल पर देशभर में वन क्षेत्र, वृक्ष आवरण, जैव विविधता और पर्यावरणीय स्थितियों का आकलन करती है। इन आंकड़ों के आधार पर ही सरकार नीतियां तैयार करती है और पर्यावरण संरक्षण के लिए योजनाएं बनाती है।

मंत्री के अनुसार भारतीय वन सर्वेक्षण विभिन्न मापदंडों पर आंकड़े जुटाता है, जिनमें मिट्टी की गहराई, मिट्टी का कटाव, वनस्पति की संरचना, जैव विविधता और वनों को प्रभावित करने वाले संभावित खतरे शामिल हैं। इन सभी सूचनाओं का विश्लेषण करके उन्हें वन स्थिति रिपोर्ट में प्रकाशित किया जाता है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य देश में वन संसाधनों की वास्तविक स्थिति को समझना और भविष्य की नीति निर्माण में सहायता प्रदान करना है।

विशेषज्ञों का मानना है कि हिमालयी क्षेत्रों में वृक्ष आवरण में कमी के पीछे कई कारण हो सकते हैं। इनमें प्राकृतिक आपदाएं, भूस्खलन, जलवायु परिवर्तन, अवैध कटाई, शहरीकरण और बुनियादी ढांचा परियोजनाएं शामिल हैं। सड़क निर्माण, पर्यटन विकास और अन्य निर्माण गतिविधियों का भी कई बार स्थानीय वन क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ता है।

इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालयी क्षेत्र में मौसम के पैटर्न में भी बदलाव देखा जा रहा है। कई स्थानों पर तापमान में वृद्धि और वर्षा के स्वरूप में परिवर्तन के कारण वनस्पति पर असर पड़ रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि इन परिवर्तनों को समय रहते नियंत्रित नहीं किया गया तो आने वाले वर्षों में हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है।

सरकार और विभिन्न पर्यावरण संगठनों द्वारा हिमालयी क्षेत्रों में वन संरक्षण और वृक्षारोपण को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की जा रही हैं। इन पहलों का उद्देश्य वन क्षेत्र को बढ़ाना, जैव विविधता को सुरक्षित रखना और स्थानीय समुदायों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ना है।

पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि हिमालय केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए जीवनदायिनी प्रणाली है। यहां के जंगल नदियों के जल स्रोतों को सुरक्षित रखते हैं, मिट्टी के कटाव को रोकते हैं और लाखों लोगों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आजीविका प्रदान करते हैं।

1 अप्रैल से नेशनल हाईवे पर सफर होगा महंगा, वार्षिक टोल पास की फीस बढ़ाकर 3075 रुपये की गई

नई दिल्ली। देशभर में नेशनल हाईवे पर यात्रा करने वाले वाहन चालकों के लिए आने वाले वित्तीय वर्ष से सफर थोड़ा महंगा होने जा रहा है। सरकार ने वार्षिक टोल पास की फीस में बढ़ोतरी करने का निर्णय लिया है। इस फैसले के तहत अब वाहन चालकों को पहले की तुलना में अधिक राशि चुकानी पड़ेगी। राष्ट्रीय राजमार्गों का प्रबंधन करने वाली संस्था National Highways Authority of India ने घोषणा की है कि वार्षिक टोल पास की फीस 3000 रुपये से बढ़ाकर 3075 रुपये कर दी गई है। नई दरें 1 अप्रैल 2026 से लागू होंगी और यह व्यवस्था वित्तीय वर्ष 2026–27 के लिए प्रभावी रहेगी।

एनएचएआई के अनुसार यह वार्षिक पास केवल निजी यानी नॉन-कमर्शियल वाहनों के लिए उपलब्ध है। इस सुविधा का लाभ लेने के लिए वाहन में सक्रिय FASTag का होना अनिवार्य है। वार्षिक पास सीधे फास्टैग से लिंक किया जाता है, जिससे टोल प्लाजा पर भुगतान की प्रक्रिया पूरी तरह स्वचालित हो जाती है। वाहन जब टोल प्लाजा से गुजरता है तो शुल्क सीधे फास्टैग खाते से कट जाता है, जिससे लंबी कतारों और नकद भुगतान की परेशानी से राहत मिलती है।

सरकार के नए नियमों के अनुसार 3075 रुपये का वार्षिक पास एक वर्ष की अवधि

तक या अधिकतम 200 बार टोल पार करने तक मान्य रहेगा। इसका मतलब यह है कि यदि कोई वाहन चालक एक वर्ष की अवधि पूरी होने से पहले ही 200 बार टोल प्लाजा पार कर लेता है, तो उसके पास की वैधता समाप्त हो जाएगी। इसके बाद उसे सामान्य टोल शुल्क देना होगा या फिर नया पास लेना पड़ेगा। इस व्यवस्था को इस तरह बनाया गया है कि नियमित रूप से हाईवे का उपयोग करने वाले निजी वाहन चालकों को एक निश्चित सीमा तक रियायती सुविधा मिल सके।

सरकार का मानना है कि यह योजना खासतौर पर उन लोगों के लिए फायदेमंद है जो रोजाना या अक्सर राष्ट्रीय राजमार्गों से गुजरते हैं। वार्षिक पास के जरिए उन्हें हर बार अलग-अलग टोल भुगतान करने की जरूरत नहीं होती और एक निश्चित शुल्क में सालभर तक सीमित संख्या में टोल पार करने की सुविधा मिल जाती है। औसतन देखा जाए तो इस पास के जरिए रोजाना लगभग 15 रुपये के बराबर खर्च में हाईवे की सुविधा उपलब्ध कराने का उद्देश्य रखा गया था।

इस वार्षिक टोल पास योजना की घोषणा पिछले वर्ष 15 अगस्त को केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री Nitin Gadkari ने की थी। उस समय सरकार ने कहा था कि यह योजना हाईवे पर यात्रा करने वाले निजी वाहन चालकों को सरल और किफायती सुविधा देने के लिए शुरू की जा रही है। इसके साथ ही डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने और टोल प्लाजा पर यातायात को सुगम बनाने का भी उद्देश्य था।

एनएचएआई ने नई दरों को लागू करने के लिए देशभर के टोल प्लाजा और संबंधित अधिकारियों को निर्देश जारी कर दिए हैं। प्राधिकरण ने कहा है कि 1 अप्रैल 2026 से नई दरों को लागू करने की तैयारी पूरी कर ली जाए और यात्रियों को इसके बारे में स्पष्ट जानकारी दी जाए। टोल प्लाजा पर सूचना बोर्ड और अन्य माध्यमों से भी वाहन चालकों को नई व्यवस्था के बारे में अवगत कराया जाएगा।

टोल शुल्क की दरों की समीक्षा हर वर्ष की जाती है और उसी के आधार पर इसमें संशोधन किया जाता है। यह प्रक्रिया सड़क परियोजनाओं के रखरखाव, संचालन लागत और अन्य आर्थिक कारकों को ध्यान में रखते हुए की जाती है। सरकार का कहना है कि राष्ट्रीय राजमार्गों के विस्तार, मरम्मत और नई परियोजनाओं के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन जुटाना भी जरूरी है, इसलिए समय-समय पर टोल दरों में बदलाव किया जाता है।

देश में पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रीय राजमार्गों का तेजी से विस्तार हुआ है और सड़क अवसंरचना को मजबूत करने के लिए कई बड़े प्रोजेक्ट चलाए जा रहे हैं। बेहतर सड़कों, एक्सप्रेसवे और हाईवे नेटवर्क के कारण यात्रा का समय कम हुआ है और माल परिवहन भी अधिक सुगम हुआ है। हालांकि इसके साथ ही टोल शुल्क को लेकर समय-समय पर बहस भी होती रही है, क्योंकि कई यात्रियों का मानना है कि लगातार बढ़ती दरें आम लोगों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालती हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल टोल प्रणाली और वार्षिक पास जैसी योजनाएं लंबी दूरी की यात्रा को अधिक व्यवस्थित बना सकती हैं। फास्टैग आधारित भुगतान से टोल प्लाजा पर रुकने का समय कम होता है और यातायात की गति भी बनी रहती है। इससे ईंधन की बचत और प्रदूषण में कमी जैसे लाभ भी मिलते हैं।

बंगाल में 'मां, माटी, मानुष' का सपना टूटा, माटी लूटी जा रही और माताएं रो रही हैं : मोदी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीतिक सरगर्मी के बीच प्रधानमंत्री Narendra Modi ने कोलकाता में आयोजित विशाल जनसभा से आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी की रणनीति और चुनावी एजेंडा स्पष्ट कर दिया। परिवर्तन यात्रा के समापन कार्यक्रम में बोलते हुए प्रधानमंत्री ने राज्य की सत्तारूढ़ All India Trinamool Congress पर तीखा हमला बोला और कहा कि जिस नारे 'मां, माटी, मानुष' के साथ सत्ता हासिल की गई थी, आज उसी बंगाल की स्थिति सबसे ज्यादा चिंताजनक हो गई है। उन्होंने कहा कि बंगाल की माताएं आज असुरक्षित महसूस कर रही हैं, जमीनों को लूटा जा रहा है और आम लोगों को मजबूरी में राज्य छोड़कर पलायन करना पड़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कभी बंगाल देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक नेतृत्व का प्रतीक हुआ करता था, लेकिन आज यहां भय, भ्रष्टाचार और राजनीतिक हिंसा का माहौल बन गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार ने विकास और सुशासन के बजाय केवल सत्ता बचाने की राजनीति को प्राथमिकता दी है। मोदी ने कहा कि बंगाल के लोगों ने बहुत उम्मीदों के साथ परिवर्तन का सपना देखा था, लेकिन पिछले वर्षों में उन्हें निराशा ही हाथ लगी है।

सभा में प्रधानमंत्री ने राज्य की मुख्यमंत्री Mamata Banerjee के नेतृत्व वाली सरकार पर सीधा हमला करते हुए कहा कि तृणमूल कांग्रेस ने बंगाल के लोगों के विश्वास को तोड़ा है। उन्होंने कहा कि 'मां, माटी, मानुष' का नारा केवल एक राजनीतिक नारा बनकर रह गया है, जबकि जमीनी हकीकत इससे बिल्कुल अलग दिखाई देती है। मोदी ने कहा कि आज बंगाल की माताएं अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं, किसानों की जमीनों पर अवैध कब्जे की शिकायतें बढ़ रही हैं और युवाओं को रोजगार के अवसरों के लिए दूसरे राज्यों की ओर जाना पड़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में राज्य में घुसपैठ और सीमा सुरक्षा के मुद्दे को भी प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा कि अवैध घुसपैठ के कारण बंगाल की "रोटी, बेटी और माटी" खतरे में पड़ गई है। उनके अनुसार बाहरी लोगों के लगातार आने से स्थानीय युवाओं के रोजगार पर असर पड़ रहा है और कई क्षेत्रों में जमीनों पर कब्जे की घटनाएं बढ़ रही हैं। मोदी ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी यह एक गंभीर मुद्दा है और इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य के कई जिलों में जनसांख्यिकीय बदलाव तेजी से हो रहा है और इस बदलाव का असर सामाजिक संतुलन पर पड़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि बंगाल में रहने वाले बंगाली हिंदुओं को कई क्षेत्रों में अल्पसंख्यक बनने की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि जब घुसपैठियों के नाम मतदाता सूची से हटाने की बात होती है तो उसका विरोध किया जाता है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए चिंता का विषय है।

सभा में प्रधानमंत्री ने दलित, आदिवासी और गरीब वर्ग की समस्याओं को भी उठाया। उन्होंने कहा कि बंगाल के सबसे कमजोर वर्गों को सबसे ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मोदी ने आरोप लगाया कि आदिवासी समाज के साथ अन्याय हो रहा है और उनकी समस्याओं को राज्य सरकार गंभीरता से नहीं ले रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा का लक्ष्य इन समुदायों को सम्मान और विकास के अवसर प्रदान करना है।

प्रधानमंत्री ने हाल ही में राष्ट्रपति Droupadi Murmu के बंगाल दौरे का भी उल्लेख किया। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार ने राष्ट्रपति के कार्यक्रम को उचित सम्मान नहीं दिया। मोदी ने इसे केवल एक संवैधानिक पद का नहीं बल्कि पूरे आदिवासी समाज के सम्मान का मुद्दा बताया। उन्होंने कहा कि यह घटना देश की सर्वोच्च संवैधानिक मर्यादाओं के प्रति राज्य सरकार के रवैये को दर्शाती है।

अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने कानून-व्यवस्था के मुद्दे को भी प्रमुखता से उठाया। उन्होंने कहा कि बंगाल में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और महिलाओं के खिलाफ अपराध की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। मोदी ने आरोप लगाया कि राज्य में राजनीतिक संरक्षण के कारण अपराधी बेखौफ होकर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले वामपंथी सरकार के समय जो गुंडे और माफिया सक्रिय थे, वही अब तृणमूल कांग्रेस के साथ मिलकर राज्य में भय का माहौल बना रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि बंगाल की जनता अब बदलाव चाहती है और वह एक ऐसी सरकार चाहती है जो विकास, पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित कर सके। उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं से आगामी चुनावों के लिए पूरी ताकत से जुटने का आह्वान किया और कहा कि पार्टी का उद्देश्य केवल सत्ता हासिल करना नहीं बल्कि बंगाल को फिर से विकास और समृद्धि के रास्ते पर लाना है।

सभा के दौरान प्रधानमंत्री ने केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं का भी उल्लेख किया और कहा कि देशभर में चल रही कई विकास योजनाओं का लाभ बंगाल के लोगों तक पूरी तरह नहीं पहुंच पा रहा है। उन्होंने दावा किया कि यदि राज्य में भाजपा की सरकार बनती है तो केंद्र और राज्य की 'डबल इंजन' सरकार मिलकर बंगाल के विकास को नई गति दे सकती है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पश्चिम बंगाल में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए सभी प्रमुख दलों ने अपनी-अपनी रणनीतियां तेज कर दी हैं। भाजपा जहां परिवर्तन और विकास के मुद्दे को प्रमुखता से उठा रही है, वहीं तृणमूल कांग्रेस अपनी सरकार की योजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों को जनता के सामने रख रही है। आने वाले महीनों में राज्य की राजनीति और भी तेज होने की संभावना है, क्योंकि चुनाव नजदीक आते ही राजनीतिक बयानबाजी और जनसभाओं का दौर लगातार बढ़ेगा।

कोलकाता की इस जनसभा को भाजपा के चुनावी अभियान की महत्वपूर्ण कड़ी माना जा रहा है। प्रधानमंत्री के भाषण ने यह स्पष्ट संकेत दे दिया है कि पार्टी आगामी चुनाव में कानून-व्यवस्था, घुसपैठ, सामाजिक सुरक्षा और विकास जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाने वाली है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

डिजिटल दुनिया ने छीनी युवाओं की नींद

भारतीय जन-जीवन में तेजी से घर करती डिजिटल जीवन शैली ने युवाओं की नींद को बुरी तरह प्रभावित किया है। जिसके चलते उनमें आक्रामकता, अवसाद व आत्महत्या की प्रवृत्ति विकसित हो रही है। देश-दुनिया में समय-समय पर आने वाले विभिन्न सर्वेक्षण इस संकट की ओर इशारा कर रहे हैं। लेकिन देश में किशोरों का स्क्रीन टाइम घातक ढंग से बढ़ रहा है। आमतौर पर चिकित्सा विशेषज्ञ मानते हैं कि किशोरों की सेहत के लिये आठ घंटे की नींद जरूरी होती है। हालांकि, कुछ विशेषज्ञ आठ घंटे के बजाय सात-छह घंटे की नींद को भी पर्याप्त मानते हैं, बशर्ते उसमें बीच में किसी तरह का व्यवधान न हो। लेकिन बिना किसी जरूरी काम के कथित सोशल मीडिया पर सक्रिय रहना आज के दौर में फैशन सा बन गया है। अमेरिका समेत कई पश्चिमी देशों में हुए हालिया शोध बताते हैं कि रात में जल्दी सोने व सुबह जल्दी उठने से बेहतर स्वास्थ्य बनता है। यह भारतीय जीवन दर्शन की अपरिहार्य धारणा भी रही है। लेकिन देश में पहले टीवी और अब मोबाइल फोन के अनियंत्रित उपयोग ने युवाओं की रात की नींद उड़ा दी है। जिसके चलते युवा पूरे दिन उखड़े-उखड़े और अशांत रहते हैं। उनमें आक्रामकता बढ़ रही है। फिर वे अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बाधित नींद की इस स्थिति में कालांतर मन में आत्महत्या जैसे नकारात्मक भाव उमड़ने लगते हैं। एक सर्वे बताता है कि देश में 73 फीसदी दसवीं के छात्र आठ घंटे से कम की नींद सोते हैं। कलकत्ता स्लीप सोसाइटी के विशेषज्ञ बताते हैं कि दुनिया में 60 से 70 फीसदी किशोर पर्याप्त नींद नहीं ले पा रहे हैं। दरअसल, आज छात्रों पर अभिभावकों व शिक्षकों का अनुशासन कम ही चलता है। मां-बाप के टोकने पर वे दलील देते हैं कि ऑन लाइन पढ़ाई चल रही है। कोरोना संकट ने देश-दुनिया में ऑनलाइन पढ़ाई का विकल्प तो दिया, लेकिन तमाम तरह की विसंगतियां व विकृतियां भी किशोरों के जीवन में भर दी हैं।

एक चौंकाने वाला आंकड़ा बताता है कि देश में सत्तर करोड़ भारतीय छह घंटे की नींद नहीं ले पाते। वहीं 46 प्रतिशत भारतीय छह घंटे से कम की नींद ले पाते हैं। लेकिन सबसे बड़ा संकट युवाओं व किशोरों से जुड़ा है। वे देर रात तक ऑनलाइन गेमों से जुड़े रहते हैं। रात में जाने-अनजाने दोस्त उनके सहभागी बनते हैं। जो कालांतर एक नशे की लत का रूप ले लेता है। परिजनों की रोक-टोक उन्हें रास नहीं आती। कई घटनाओं में उनके आक्रामक व्यवहार के घातक परिणाम सामने आए हैं। यहां तक कि नजदीकी परिजनों की हत्या की घटनाएं भी हुई हैं। दरअसल, ऑनलाइन खेलों को इस तरह डिजाइन किया गया है कि वे किशोरों के लिये नशा बन जाते हैं। रात का एकांत उन्हें रास आता है। जिसके चलते वे नींद की परवाह नहीं करते। वहीं दूसरी ओर सोशल मीडिया व ओटीटी प्लेटफॉर्मों पर तमाम वर्जित व अश्लील सामग्री की रात्रि में भरमार रहती है। जिसकी चपेट में छोटे-बड़े लोग आ रहे हैं। युवा देर रात का एकांत तलाशते हैं ताकि परिजनों की अनुपस्थिति में वे मनमानी कर सकें। वे देर रात तक ऑनलाइन रहने में अपनी शान समझते हैं। यह भूल जाते हैं कि वास्तव में, वे अपनी सेहत से किस हद तक खिलवाड़ कर रहे हैं। चिकित्सा विशेषज्ञ चेतावनी देते रहे हैं अनिद्रा से उच्च रक्तचाप की समस्या पैदा हो रही है। जो कालांतर हाइपरटेंशन में बदल जाती है। दरअसल, शरीर की जैविक घड़ी के परिचालन में व्यवधान से शरीर नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। देर रात जागने और मोबाइल के नशे में किशोर असमय खाते-पीते हैं, जिससे उनमें मोटापे की समस्या भी घर कर रही है। यही वजह है कि अब किशोरों तक में डाइबिटीज की समस्या देखने में आ रही है। दरअसल, कुदरती सोने के समय का विकल्प देर रात या सुबह की नींद नहीं हो सकती है। यह संकट बड़ा है और अभिभावकों व शिक्षकों को किशोरों की देर रात जागने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिये गंभीर प्रयास करने होंगे। अन्यथा देश को कालांतर अस्वस्थ युवा पीढ़ी का संत्रास झेलने को बाध्य होना पड़ेगा।

घातक हो सकती है मशीनों की निर्णायक भूमिका

> जब एल्गोरिद्म यह तय करने लगें कि किसे निशाना बनाया जाए, तो मानव नैतिकता और जिम्मेदारी का स्थान क्या होगा? युद्ध का निर्णय केवल तकनीकी गणना का विषय नहीं हो सकता। हर लक्ष्य के पीछे मनुष्य का जीवन और समाज की संरचना जुड़ी होती है।

हाल ही में ईरान पर हुए हमलों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आधुनिक युद्ध अब केवल हथियारों की ताकत से नहीं, बल्कि डेटा, एल्गोरिद्म और मशीनों की गति से भी लड़े जा रहे हैं। पिछले दिनों अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा ईरान पर किए गए हमलों में एआई की निर्णायक भूमिका सामने आई। रिपोर्टों के अनुसार, एआई आधारित 'मेवन स्मार्ट सिस्टम' ने रियल-टाइम में लाखों डेटा और निगरानी सूचनाओं का विश्लेषण कर संभावित लक्ष्यों की पहचान की। इस तकनीक की मदद से कुछ ही घंटों में सैकड़ों हमले किए गए और बड़ी संख्या में लोग मारे गए।

न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार, मेवन सिस्टम के विकास की शुरुआत 2017 में हुई थी। अमेरिकी रक्षा विभाग ने महसूस किया कि उनके पास ड्रोन फुटेज का इतना विशाल भंडार है कि उसे देखने के लिए पर्याप्त इंसान ही नहीं हैं। शुरुआत में, अमेरिकी सेना ने गूगल के साथ साझेदारी की। इसके विरोध में 3,000 से अधिक कर्मचारियों ने प्रदर्शन किया। वर्ष 2018 में गूगल ने इस प्रोजेक्ट से हाथ खींच लिए। बाद में पेंटागन ने एंडुइल इंडस्ट्रीज और पालंटिर जैसी छोटी टेक कंपनियों पर दांव लगाया।

पालंटिर टेक्नोलाजीज द्वारा तैयार किया गया मेवन स्मार्ट सिस्टम बेहद शक्तिशाली एआई एल्गोरिदम है, जिसने आधुनिक युद्ध के तौर-तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है। इसका मुख्य काम कंप्यूटर विजन का उपयोग करके युद्ध के मैदान की लाखों तस्वीरों और वीडियो फुटेज को स्कैन करना है। ड्रोन और सेटेलाइट से मिलने वाले अंतहीन वीडियो फुटेज को इंसान के लिए देख पाना और उसमें से खतरे को पहचानना नामुमकिन है। मेवन इसे सेकंडों में कर लेता है। यह सिस्टम भीड़ में से दुश्मन की गाड़ियों, हथियारों के डिपो और छिपे हुए ठिकानों को पहचान सकता है। यह शोर और सिग्नल के बीच अंतर कर सकता है, जिससे नागरिकों की मौत की संख्या कम करने और सटीक हमले करने में मदद मिलती है।

पहले किसी लक्ष्य की पहचान करने, उसकी पुष्टि करने और उस पर हमला करने में कई घंटे या कभी-कभी कई दिन लग जाते थे। अब यही प्रक्रिया कुछ ही मिनटों या सेकंडों में पूरी हो सकती है। उपग्रह चित्र, ड्रोन कैमरे, संचार संकेत और खुफिया जानकारी—इन सबका विश्लेषण करने के लिए एआई एल्गोरिद्म का उपयोग किया जा रहा है। मशीनें विशाल डेटा का विश्लेषण कर संभावित लक्ष्यों की सूची तैयार करती हैं और सैन्य कमांडरों को तुरंत निर्णय लेने में मदद करती हैं। मेवन प्रणाली उपग्रह चित्रों, ड्रोन फुटेज, संचार अवरोधन और अन्य खुफिया स्रोतों से आने वाले विशाल डेटा का विश्लेषण करती है। इसके बाद यह संभावित लक्ष्यों की सूची तैयार कर उन्हें प्राथमिकता के आधार पर क्रमबद्ध करती है, जिससे सैन्य कमांडर तेजी से निर्णय ले सकते हैं। यही कारण है कि आधुनिक युद्धों में हमलों की गति और तीव्रता दोनों बढ़ गई हैं। ऐसी तकनीक ने युद्ध संचालन की गति को लगभग दोगुना कर दिया है।

सवाल यह है कि जब एल्गोरिद्म यह तय करने लगें कि किसे निशाना बनाया जाए, तो मानव नैतिकता और जिम्मेदारी का स्थान क्या होगा? युद्ध का निर्णय केवल तकनीकी गणना का विषय नहीं हो सकता। हर लक्ष्य के पीछे मनुष्य का जीवन और समाज की संरचना जुड़ी होती है।

विशेषज्ञों का मानना है कि एआई आधारित युद्ध प्रणाली में गलती की संभावना भी उतनी ही खतरनाक हो सकती है जितनी उसकी क्षमता। यदि किसी नागरिक क्षेत्र को गलती से सैन्य लक्ष्य मान लिया जाए, तो उसके परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं। कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन और नीति विशेषज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि एआई आधारित हथियारों में अंतिम निर्णय मनुष्य के हाथ में ही रहना चाहिए। इसे 'ह्यूमन-इन-द-लूप' सिद्धांत कहा जाता है।

एआई, ड्रोन स्वार्म, स्वचालित हथियार और साइबर युद्ध—ये सब मिलकर भविष्य के युद्धों की नई तस्वीर बना रहे हैं। आने वाले वर्षों में युद्ध केवल जमीन, समुद्र और आकाश तक सीमित नहीं रहेगा; यह डेटा सेंटर, उपग्रह नेटवर्क और एल्गोरिद्म के स्तर पर भी लड़ा जाएगा।

भारत ने हाल के वर्षों में रक्षा तकनीक, ड्रोन और एआई अनुसंधान में तेजी दिखाई है, लेकिन वैश्विक प्रतिस्पर्धा को देखते हुए इस क्षेत्र में और अधिक निवेश और रणनीतिक सोच की आवश्यकता है। आत्मनिर्भर रक्षा तकनीक केवल सुरक्षा का प्रश्न नहीं है, बल्कि भविष्य की वैश्विक शक्ति संरचना में अपनी भूमिका तय करने का भी माध्यम है।

प्रश्न केवल तकनीक का नहीं, बल्कि मानवता का है। यदि युद्ध की गति मशीनों के हाथों में चली गई, तो क्या मानवीय विवेक पीछे छूट जाएगा? एआई युद्ध को तेज, सटीक और व्यापक बना सकता है, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि हर बटन के पीछे अंततः एक मानव निर्णय होना चाहिए। युद्ध की सबसे बड़ी कीमत हमेशा इंसान ही चुकाता है—मशीनें नहीं।

प्रेरणा

भक्ति और मर्यादा का अद्भुत संगमः जब प्रभु और भक्त बने एक

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में भगवान और भक्त के संबंध को अत्यंत पवित्र और रहस्यमय माना गया है। यह संबंध केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि प्रेम, समर्पण, विनम्रता और आत्मिक एकत्व का गहरा अनुभव भी कराता है। जब भक्त अपने अहंकार को त्यागकर पूर्ण रूप से प्रभु की शरण में जाता है, तब उसके जीवन में भक्ति का ऐसा प्रकाश फैलता है, जो उसे परम सत्य के निकट ले जाता है। हमारे धर्मग्रंथों में अनेक ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जो इस दिव्य संबंध की गहराई को स्पष्ट करते हैं। ऐसा ही एक अत्यंत भावपूर्ण और आध्यात्मिक संदेश देने वाला प्रसंग है प्रभु श्रीराम और उनके अनन्य भक्त हनुमान के बीच का, जो भक्त और भगवान के अद्भुत संबंध को दर्शाता है।

लंका विजय के बाद जब प्रभु श्रीराम माता सीता और वानर सेना सहित अयोध्या लौटे, तब पूरे नगर में अपार उत्साह और आनंद का वातावरण था। वर्षों की प्रतीक्षा के बाद अयोध्यावासियों को अपने प्रिय राम के दर्शन प्राप्त हुए थे। नगर को सजाया गया, दीप जलाए गए और हर ओर मंगल गीत गूंजने लगे। इस अवसर पर प्रभु के स्वागत में एक विशाल और भव्य भोज का आयोजन किया गया। यह केवल भोजन का कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह उस प्रेम, कृतज्ञता और उल्लास का प्रतीक था जो अयोध्या की जनता के हृदय में अपने आराध्य राजा के प्रति उमड़ रहा था।

भोज के आयोजन की जिम्मेदारी वानर सेना के सबसे प्रिय और विश्वसनीय सेवक हनुमान जी ने संभाली। वे अत्यंत सावधानी और समर्पण के साथ सभी वानरों के बैठने और भोजन की व्यवस्था कर रहे थे। हर अतिथि को उचित स्थान मिले, किसी को असुविधा न हो, सभी को समय पर भोजन मिले—इन सभी बातों का वे स्वयं ध्यान रख रहे थे। उनका स्वभाव ही ऐसा था कि वे अपने लिए कुछ नहीं सोचते थे, बल्कि सदैव दूसरों की सेवा में लगे रहते थे। यही कारण था कि वे केवल बल और पराक्रम में ही नहीं, बल्कि विनम्रता और भक्ति में भी अद्वितीय थे।

जब सभी वानर और अतिथि भोजन के लिए बैठ गए, तब हनुमान जी प्रभु श्रीराम के पास पहुंचे। वे यह देखने आए थे कि कहीं व्यवस्था में कोई कमी तो नहीं रह गई। प्रभु श्रीराम अपने प्रिय भक्त के इस सेवा भाव को देखकर अत्यंत प्रसन्न थे। उन्होंने प्रेम और स्नेह से हनुमान की ओर देखा और कहा कि हनुमान भी उनके साथ बैठकर भोजन करें। प्रभु के इस स्नेहपूर्ण आग्रह को सुनकर हनुमान जी दुविधा में पड़ गए। उनके मन में गहरी विनम्रता और सेवा का भाव था। वे स्वयं को केवल प्रभु का सेवक मानते थे। उनके लिए प्रभु के साथ बैठकर भोजन करना उचित नहीं लगता था। वे सोचने लगे कि जिस प्रभु की सेवा करना ही उनके जीवन का उद्देश्य है, उनके साथ समान स्तर पर बैठना कैसे संभव हो सकता है। उनके हृदय में प्रभु के प्रति इतना आदर और श्रद्धा थी कि वे स्वयं को उनके चरणों की धूल के समान भी नहीं मानते थे।

हनुमान जी की यह दुविधा उनके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। प्रभु श्रीराम तो अंतर्यामी थे। वे अपने भक्त के मन की प्रत्येक भावना को भली-भांति समझते थे। उन्होंने तुरंत ही हनुमान के मन की स्थिति को जान लिया। प्रभु जानते थे कि हनुमान का संकोच अहंकार से नहीं, बल्कि गहरी भक्ति और मर्यादा से उत्पन्न हुआ है। वे अपने भक्त की इस भावना का सम्मान भी करना चाहते थे और साथ ही उसे अपने प्रेम का अनुभव भी कराना चाहते थे।

तभी प्रभु श्रीराम ने एक अद्भुत उपाय किया। उनके सामने केले का एक पत्ता बिछा था, जिसमें भोजन परोसा गया था। प्रभु ने अपनी मध्यमा अंगुली से उस पत्ते के बीच में एक हल्की रेखा खींच दी। यह रेखा इतनी सूक्ष्म थी कि पत्ता वास्तव में एक ही था, लेकिन देखने में दो भागों में बंटा हुआ प्रतीत होता था। इसके बाद प्रभु ने एक भाग में स्वयं भोजन करना प्रारंभ किया और दूसरे भाग में हनुमान को बैठाकर भोजन करने के लिए कहा।

इस दृश्य को देखकर वहां उपस्थित सभी लोग भावविभोर हो गए। यह केवल एक साधारण घटना नहीं थी, बल्कि इसके भीतर एक अत्यंत गहरा आध्यात्मिक संदेश छिपा हुआ था। प्रभु श्रीराम का यह संकेत था कि भक्त और भगवान के बीच मूल रूप से कोई भेद नहीं है। दोनों का अस्तित्व एक ही सत्य से जुड़ा हुआ है। जब भक्त अपने भीतर के अहंकार को मिटाकर पूर्ण समर्पण के साथ प्रभु की भक्ति करता है, तब वह उसी दिव्य चेतना का अनुभव करने लगता है, जो परमात्मा में विद्यमान है।

दूसरी ओर हनुमान जी का भाव यह था कि जीव और परमात्मा के बीच एक मर्यादित संबंध भी होता है। भक्त का कर्तव्य है कि वह प्रभु की सेवा करे, उनके चरणों में अपना जीवन अर्पित करे और विनम्रता के साथ उनकी आज्ञा का पालन करे। यही कारण है कि हनुमान जी सदैव स्वयं को प्रभु का दास मानते थे। उनके लिए सेवा ही सबसे बड़ा धर्म था और प्रभु की प्रसन्नता ही सबसे बड़ा पुरस्कार।

इस प्रकार इस छोटे से प्रसंग में द्वैत और अद्वैत दोनों का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। एक ओर प्रभु का संदेश है कि आत्मा और परमात्मा में अंततः एकत्व है, वहीं दूसरी ओर भक्त का भाव यह है कि सेवा और भक्ति के माध्यम से ही उस एकत्व की अनुभूति संभव है। यही वह सिद्धांत है जिसे हमारे दर्शन में "द्वैत में अद्वैत" कहा गया है।

यह प्रसंग हमें यह भी सिखाता है कि सच्ची भक्ति केवल शब्दों या बाहरी आडंबरों से नहीं आती। इसके लिए आवश्यक है कि मन में विनम्रता, सेवा और समर्पण का भाव हो। जब व्यक्ति अपने अहंकार को त्यागकर दूसरों की सेवा करने लगता है, तब उसके भीतर दिव्यता का प्रकाश स्वतः प्रकट होने लगता है। यही कारण है कि हनुमान जी को भक्ति का सर्वोच्च आदर्श माना जाता है। आज के समय में जब मनुष्य अक्सर अहंकार, प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ में उलझ जाता है, तब यह प्रसंग हमें एक महत्वपूर्ण संदेश देता है। यह बताता है कि जीवन का वास्तविक सुख और शांति सेवा, प्रेम और समर्पण में ही निहित है। यदि मनुष्य अपने जीवन में इन गुणों को अपनाए, तो वह न केवल दूसरों के लिए प्रेरणा बन सकता है, बल्कि स्वयं भी आत्मिक संतोष और आनंद का अनुभव कर सकता है।

अंततः यह कथा हमें यह समझाती है कि भगवान और भक्त के बीच का संबंध केवल पूजा तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह प्रेम, विश्वास और समर्पण की गहराई से जुड़ा होता है। जब भक्त अपने हृदय को पूरी तरह प्रभु के प्रति समर्पित कर देता है, तब उसके जीवन में ऐसा आध्यात्मिक प्रकाश फैलता है, जो उसे परम सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ाता है। यही वह मार्ग है, जो मनुष्य को वास्तविक आत्मिक कल्याण और परम आनंद की ओर ले जाता है।

सवालों के घेरे में सिविल सेवा परीक्षा, रिजल्ट पर स्पष्टता के अभाव का असर

देश के सर्वोच्च प्रशासनिक ढांचे के लिए अफसरों की भर्ती करने वाली संस्था यूपीएससी (संघ लोक सेवा आयोग) द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा के हालिया परिणामों ने पिछले वर्षों की तुलना में अधिक हलचल पैदा की है। पहले दो दिनों तक सफल उम्मीदवारों में एक ही नाम की दो आकांक्षा सिंह को लेकर खबरें चर्चा में रहीं। इस मामले की जांच के बीच एक अन्य अभ्यर्थी ने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

उन्हें 2024 में सामान्य वर्ग से भारतीय पुलिस सेवा मिली थी, पर 2025 में उन्होंने अपना वर्ग सामान्य के बजाय ईडब्ल्यूएस (आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग) घोषित कर दिया। आइपीएस बनने के बाद ऐसा कैसे संभव है? पिछले पांच वर्षों में ऐसे कई मामले यूपीएससी, अदालतों और कार्मिक मंत्रालय के सामने आ चुके हैं। कहीं न कहीं नियमों में लचीलेपन, स्पष्टता का अभाव और स्थानीय प्रशासन में भ्रष्टाचार के कारण ऐसी स्थितियां पैदा हो रही हैं। तीन वर्ष पहले महाराष्ट्र की पूजा खेडकर का मामला भी सामने आया था, जिसमें आरोप लगा कि उन्होंने कई नियमों की अनदेखी करते हुए आइएएस सेवा प्राप्त की। फर्जी एससी-एसटी प्रमाणपत्रों से जुड़े भी अनेक मामले यूपीएससी के सामने आ चुके हैं। यही कारण है कि हाल में यूपीएससी ने इन गड़बड़ियों को ध्यान में रखते हुए आवेदन प्रक्रिया में कुछ महत्वपूर्ण संशोधन किए हैं, ताकि भविष्य में ऐसी अनियमितताओं को रोका जा सके। इस बार के परीक्षा परिणाम में एक और तथ्य ने ध्यान खींचा। वह है आदिवासी कोटे में 73 में से एक जनजाति के करीब 30 प्रतिशत अभ्यर्थियों का चयन।

ऐसे छात्र, जो दिल्ली जैसे महानगरों में पैदा हुए, आधुनिक सुविधाओं के बीच पले-बढ़े और अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में पढ़े, यदि आदिवासी कोटे का लाभ ले रहे हैं तो क्या वे उन सैकड़ों जरूरतमंद आदिवासियों का हक नहीं छीन रहे, जिनके लिए यह व्यवस्था बनाई गई है। इस बार भी अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के बीच असमानता का प्रश्न उतना ही महत्वपूर्ण बना हुआ है। भारतीय भाषाओं के माध्यम से परीक्षा देने वाले उम्मीदवारों का चयन मुश्किल से पांच प्रतिशत तक ही सीमित क्यों रह जाता है, जबकि लगभग 95 प्रतिशत चयन अंग्रेजी माध्यम के उम्मीदवारों का होता है? इस बार इंटरव्यू के अंकों को लेकर भी गंभीर सवाल खड़े हुए हैं। सिविल सेवा परीक्षा की मुख्य लिखित परीक्षा 1,750 अंकों की होती है, जबकि इंटरव्यू के लिए 275 अंक निर्धारित हैं। इस बार के परिणामों के आंकड़े बताते हैं कि लिखित परीक्षा में टापर्स सहित किसी के भी 50 प्रतिशत से अधिक अंक नहीं आए, लेकिन इंटरव्यू में 65 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में कई गुना अधिक है। 275 में से 200 या उससे अधिक अंक पाने वाले उम्मीदवारों की संख्या काफी अधिक है। जिस परीक्षा में एक-एक अंक उम्मीदवारों के भविष्य का निर्धारण करता हो, वहां यूपीएससी के इस प्रकार के परिणाम स्वाभाविक रूप से कई गंभीर प्रश्न खड़े करते हैं।

इस बार का टापर उम्मीदवार एमबीबीएस डाक्टर है। प्रश्न है कि ऐसे डाक्टर लगातार सिविल सेवाओं की ओर आकर्षित क्यों हो रहे हैं, जबकि विश्व के कई देशों की तुलना में भारत में प्रति व्यक्ति डाक्टरों की उपलब्धता अभी भी बहुत कम है। पर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं न होने के कारण देश की एक बड़ी आबादी की कार्यक्षमता प्रभावित होती है और वह राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में पूरी तरह भागीदारी नहीं कर पाती। इसी तरह आइआइटी जैसे प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थानों से पढ़े हुए छात्र भी पिछले लगभग दो दशकों से बड़ी संख्या में सिविल सेवाओं की ओर रुख कर रहे हैं।

दुर्भाग्य की बात यह भी है कि कठिन प्रतियोगी परीक्षा पास कर आइआइटी जैसे संस्थानों में प्रवेश पाने वाले अनेक छात्र सिविल सेवा परीक्षा में अपने मूल विषय इंजीनियरिंग को वैकल्पिक विषय के रूप में नहीं चुनते। इनमें से लगभग 80 प्रतिशत एंथ्रोपोलाजी, राजनीतिक विज्ञान, समाजशास्त्र जैसे विषयों को चुनते हैं। कई बार वे संस्कृत, मैथिली या अन्य भारतीय भाषाओं को भी वैकल्पिक विषय के रूप में लेते हैं। यह प्रवृत्ति सिविल सेवा परीक्षा की संरचना और विषय चयन की प्रकृति को लेकर भी कई प्रश्न खड़े करती है। ये सभी प्रश्न नए नहीं हैं, लेकिन अब उन्होंने विकराल रूप धारण कर लिया है।

किसी भी जीवंत समाज के लिए प्रश्न उठाना और उन पर गंभीर चर्चा करना आवश्यक होता है। यह देश के शासन और प्रशासन की जिम्मेदारी है कि इन प्रश्नों के हल के लिए ठोस पहल करे। बेहतर होगा कि 1979 में गठित दौलत सिंह कोठारी समिति द्वारा तैयार प्रशासनिक सेवाओं के ढांचे की व्यापक समीक्षा की जाए। उस समिति की सिफारिशों के आधार पर तैयार की गई व्यवस्था आज भी कुछ परिवर्तनों के साथ लागू है, इसलिए समय की आवश्यकताओं के अनुसार उसका पुनर्मूल्यांकन किया जाए। एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि सफल उम्मीदवारों में कार्य के प्रति निष्ठा, सादगी, ईमानदारी और सच्चे जनसेवक बनने की भावना कैसे विकसित की जाए। यह कार्य आसान नहीं है, फिर भी यूपीएससी की प्रतिष्ठा और प्रशासनिक व्यवस्था की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है।

अभियान

आत्मचेतना की ज्योति और जीवन की पूर्णताः सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की अंतर्दृष्टि

भारतीय सनातन चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह जीवन को केवल बाहरी घटनाओं या उपलब्धियों से नहीं देखता, बल्कि उसके भीतर छिपे हुए सत्य को पहचानने की प्रेरणा देता है। इसी आध्यात्मिक दृष्टि में कुछ ऐसे शब्द विकसित हुए हैं जो मानव जीवन के गहनतम अर्थ को प्रकट करते हैं। सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् ऐसे ही तीन शब्द हैं, जो सुनने में सरल लगते हैं, लेकिन उनके भीतर जीवन, प्रकृति और आत्मा का अत्यंत गहरा रहस्य छिपा हुआ है। जब इन तीनों शब्दों का एक साथ उच्चारण होता है तो ऐसा लगता है जैसे जीवन की पूर्णता का कोई सूत्र सामने आ गया हो। इन शब्दों में सत्य का स्थायित्व, कल्याण का विस्तार और सौंदर्य की अनुभूति तीनों समाहित हैं।

भारतीय वाङ्मय में यह तीनों शब्द अलग-अलग स्थानों पर अत्यंत महिमामंडित किए गए हैं। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में सत्य, शिव और सौंदर्य के विविध रूपों का वर्णन मिलता है। यद्यपि इनका प्रयोग अक्सर अलग-अलग संदर्भों में हुआ है, फिर भी जब इन्हें एक साथ देखा जाता है तो यह जीवन की संपूर्णता का प्रतीक बन जाते हैं। इन तीनों का संबंध केवल दर्शन से नहीं है, बल्कि मनुष्य के दैनिक जीवन, उसके विचारों और उसके व्यवहार से भी है।

सत्यम् का अर्थ है वह जो सदैव एक समान रहता है। सत्य वह है जो कभी बदलता नहीं, जो समय, परिस्थिति और स्थान से परे है। यह केवल किसी कथन की सत्यता नहीं, बल्कि अस्तित्व का मूल स्वरूप है। संसार में जो कुछ भी बदलता है वह अस्थायी है। शरीर बदलता है, विचार बदलते हैं, परिस्थितियां बदलती हैं, लेकिन सत्य नहीं बदलता। इसलिए भारतीय दर्शन में सत्य को शाश्वत कहा गया है। यही कारण है कि हमारे ग्रंथों में बार-बार यह कहा गया है कि अंततः सत्य की ही विजय होती है। फिर भी मनुष्य के मन में एक प्रश्न उठता है कि यदि सत्य इतना शक्तिशाली और शाश्वत है, तो संसार में असत्य का प्रभाव क्यों दिखाई देता है। क्यों हर युग में सत्य की स्थापना के लिए संघर्ष करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि सत्य स्वयं अटल है, लेकिन मनुष्य की चेतना स्थिर नहीं रहती। जब मनुष्य अपने भीतर के प्रकाश से दूर हो जाता है, तब वह भ्रम और अज्ञान में पड़ जाता है। इसी अज्ञान के कारण वह असत्य को भी सत्य समझने लगता है। इसलिए समय-समय पर सत्य की पुनः स्थापना की आवश्यकता पड़ती है। सत्य का वास्तविक अर्थ केवल तथ्यात्मक सत्य तक सीमित नहीं है। वह जीवन की उस अवस्था का संकेत है जहां मनुष्य अपने भीतर की शुद्ध चेतना से जुड़ जाता है। जब ऐसा होता है तब उसके विचार, उसके निर्णय और उसका आचरण सब सत्य के अनुरूप होने लगते हैं। यही वह अवस्था है जहां से जीवन में वास्तविक परिवर्तन प्रारंभ होता है।

सत्यम् के साथ जब शिवम् का भाव जुड़ता है तो जीवन का अर्थ और भी व्यापक हो जाता है। शिवम् का अर्थ है कल्याणकारी। जो सबके हित में हो, जो संसार में संतुलन और समरसता बनाए, वही शिव है। भारतीय परंपरा में शिव केवल एक देवता का नाम नहीं है, बल्कि एक ऐसे तत्व का प्रतीक है जो संपूर्ण सृष्टि के कल्याण का प्रतिनिधित्व करता है। वैदिक साहित्य में 'शिव' शब्द का प्रयोग उस शक्ति के लिए किया गया है जो संकटों को दूर करती है और जीवन को मंगलमय बनाती है। जब मनुष्य सत्य को समझने लगता है, तब उसके भीतर स्वाभाविक रूप से कल्याण की भावना उत्पन्न होने लगती है। वह केवल अपने हित के बारे में नहीं सोचता, बल्कि दूसरों के सुख-दुख को भी समझने लगता है। यही भावना उसे शिवत्व की ओर ले जाती है। इस अवस्था में मनुष्य का जीवन केवल व्यक्तिगत इच्छाओं का केंद्र नहीं रहता, बल्कि वह समाज, प्रकृति और समस्त जीवन के प्रति जिम्मेदारी महसूस करने लगता है।

शिवत्व का अर्थ है ऐसा जीवन जीना जिसमें दूसरों के लिए शुभ भाव हो। जहां दया हो, करुणा हो, सहयोग हो और सबके हित की भावना हो। जब ये गुण मनुष्य के जीवन में विकसित होते हैं, तब वह वास्तव में शिवत्व के निकट पहुंचने लगता है।

तीसरा तत्व है सुंदरम्। सामान्य रूप से सुंदरता को बाहरी रूप, आकर्षण या सजावट से जोड़ा जाता है। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि में सुंदरम् का अर्थ इससे कहीं अधिक व्यापक है। सुंदरम् वह है जिसमें सत्य और कल्याण दोनों का समन्वय हो। जब किसी व्यक्ति के जीवन में सत्य का आधार और कल्याण की भावना होती है, तब उसका जीवन स्वयं ही सुंदर बन जाता है।

यह सुंदरता केवल चेहरे या रूप में नहीं दिखाई देती, बल्कि व्यक्ति के विचारों, व्यवहार और व्यक्तित्व में झलकती है। ऐसा व्यक्ति जहां भी जाता है, वहां एक सकारात्मक ऊर्जा फैलती है। उसकी उपस्थिति ही दूसरों के लिए प्रेरणा बन जाती है। यदि इन तीनों शब्दों को एक सूत्र में बांधा जाए तो उनका अर्थ यह निकलता है कि जो सत्य है वही कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही वास्तव में सुंदर है। जब सत्य विकृत हो जाता है या जब कल्याण की भावना समाप्त हो जाती है, तब सौंदर्य भी नष्ट हो जाता है। मनुष्य के जीवन में अक्सर यह समस्या होती है कि वह अपने व्यक्तिगत अनुभव या लाभ को ही सत्य मान लेता है। कभी-कभी जो हमें सही लगता है वह सबके लिए हितकारी नहीं होता। तब मनुष्य अपने स्वार्थ के कारण किसी असत्य को भी सत्य की तरह प्रस्तुत करने लगता है। यही वह स्थिति है जहां से जीवन में विकार और भ्रम उत्पन्न होते हैं।

उपनिषद हमें यह सिखाते हैं कि सत्य को जानने के लिए हमें अपने भीतर झांकना होगा। जो कुछ भी बाहरी है वह बदलता रहता है। शरीर बदलता है, परिस्थितियां बदलती हैं, विचार बदलते हैं। लेकिन आत्मा का प्रकाश नहीं बदलता। वही सत्य है। उसी को पहचानना ही अध्यात्म की यात्रा है। जब मनुष्य अपने भीतर के इस आत्मप्रकाश को अनुभव करने लगता है, तब उसके जीवन में एक गहरा परिवर्तन आने लगता है। उसके भीतर दया, करुणा और धर्म के भाव स्वतः विकसित होने लगते हैं। वह दूसरों के प्रति संवेदनशील हो जाता है और जीवन को अधिक व्यापक दृष्टि से देखने लगता है।

प्रकृति भी हमें सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है। जल जीवन का आधार है और सबके लिए समान रूप से उपयोगी है। वायु बिना किसी भेदभाव के हर प्राणी को जीवन देती है। सूर्य की किरणें पूरी पृथ्वी को प्रकाश और ऊर्जा प्रदान करती हैं। यह सब प्रकृति के ऐसे रूप हैं जिनमें सत्य, कल्याण और सौंदर्य तीनों एक साथ दिखाई देते हैं।

जब हम नदी के प्रवाह को देखते हैं, हवा के स्पर्श को महसूस करते हैं या सूर्य की किरणों को धरती पर फैलते हुए देखते हैं, तब हमें प्रकृति का अद्भुत सौंदर्य दिखाई देता है। यह सौंदर्य इसलिए है क्योंकि प्रकृति का प्रत्येक तत्व सबके हित में कार्य करता है। जहां कल्याण होता है, वहां सुंदरता अपने आप प्रकट हो जाती है।

मनुष्य के भीतर भी ऐसा ही दिव्य प्रकाश विद्यमान है। यह आत्मप्रकाश हर व्यक्ति के भीतर है, लेकिन उसे पहचानने की क्षमता सभी में समान रूप से विकसित नहीं होती। जब मनुष्य अपने भीतर की शुद्ध चेतना को पहचानने का प्रयास करता है, तब धीरे-धीरे यह प्रकाश प्रकट होने लगता है। जब यह आत्मप्रकाश प्रकट होता है, तब उसका प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व में दिखाई देने लगता है। उसके चेहरे पर शांति और संतुलन की झलक दिखाई देती है। उसके व्यवहार में सरलता और विनम्रता आ जाती है। वह अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत इच्छाओं तक सीमित नहीं रखता, बल्कि दूसरों के जीवन में भी प्रकाश फैलाने का प्रयास करता है।

यही वह अवस्था है जहां सत्यम्, शिवम् और सुंदरम् का वास्तविक अर्थ समझ में आता है। जब मनुष्य सत्य के निकट आता है, तब वह कल्याणकारी बनता है और जब वह कल्याणकारी बनता है, तब उसके जीवन में सौंदर्य स्वतः प्रकट हो जाता है।

अंततः जीवन की वास्तविक यात्रा यही है कि मनुष्य अपने भीतर के सत्य को पहचाने, उस सत्य के आधार पर कल्याणकारी जीवन जिए और अपने आचरण से संसार में सुंदरता का विस्तार करे। जब ऐसा होता है, तब मनुष्य का जीवन केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह संपूर्ण सृष्टि के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है। यही आत्मचेतना की ज्योति है, जो जीवन को पूर्णता की ओर ले जाती है और यही वह मार्ग है जो मनुष्य को आंतरिक शांति, संतुलन और वास्तविक आनंद की अनुभूति कराता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

15 मार्च, विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

वर्ष 2025 के दौरान राज्य तथा जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग द्वारा क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया

राज्य सरकार द्वारा उपभोक्ताओं से जुड़ी शिकायतों के लिए शुरू की गई हेल्पलाइन से 22700 से अधिक लोगों को मिला मार्गदर्शन

गांधीनगर : एक जागरूक उपभोक्ता सशक्त समाज तथा विश्वसनीय बाजार व्यवस्था का आधार है। विश्वभर में उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के विषय में अवगत करने के लिए हर वर्ष 15 मार्च को 'विश्व उपभोक्ता दिवस' मनाया जाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में केन्द्र सरकार उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा हो तथा उन्हें सुरक्षित उत्पाद उपलब्ध हों; इसके लिए निरंतर कार्य कर रही है। गुजरात में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार उपभोक्ताओं को उनकी शिकायतों का त्वरित एवं प्रभावी निवारण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्ष 2025 की बात करें, तो राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग तथा जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग द्वारा क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया है।

कंज्यूमर्स क्लब के लिए राज्य सरकार करती है वार्षिक 1.25 करोड़ रुपए का खर्च

राज्य के नागरिकों में उपभोक्ता के रूप में जागरूकता बढ़े, राज्य का युवाधन उपभोक्ता सुरक्षा गतिविधि में जुड़ने को प्रेरित हो और राज्य में उपभोक्ता गतिविधि को वेग मिले; इस उद्देश्य से कंज्यूमर्स क्लब की योजना शुरू की गई है। हाल में राज्य सरकार द्वारा कुल 2500 कंज्यूमर्स क्लब तैयार किए गए हैं, जिसमें जिलेवार एक समन्वय एजेंसी के रूप में मान्यता प्राप्त उपभोक्ता सुरक्षा मंडल कामकाज करता है। राज्य सरकार द्वारा प्रति क्लब 5000 रुपए की वित्तीय सहायता का भुगतान किया जाता है, जिसके लिए राज्य सरकार वार्षिक लगभग 1.25 करोड़ रुपए खर्च करती है।

विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस 2026 की थीम : सुरक्षित उत्पाद, आश्वस्त उपभोक्ता

इस वर्ष विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस 2026 'सेफ प्रोडक्ट्स, कॉन्फिडेंट कंज्यूमर्स' (सुरक्षित उत्पाद, आश्वस्त उपभोक्ता) थीम अंतर्गत मनाया जा रहा है। इस थीम का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को सुरक्षित एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। यह अभियान ऑनलाइन तथा ऑफलाइन बिकने वाले जोखिम भरे या असुरक्षित उत्पादों के विरुद्ध कड़े नियम और देखरेख मजबूत बनाने की जरूरत पर जोर देता है। इसके साथ प्रोडक्ट सुरक्षित है या नहीं; यह सुनिश्चित करने के लिए सरकार, उद्योगों तथा ग्राहकों के बीच सहयोग बढ़ाने पर बल दिया गया है।

2025 में राज्य तथा जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग द्वारा क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया

गुजरात में वर्ष 2025 के दौरान राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग में 2047 तथा अधीनस्थ जिला उपभोक्ता निवारण आयोग में 18166 शिकायतें दर्ज हुई थीं, जिनमें से क्रमशः 1670 तथा 12920 मामलों का समाधान किया गया है। इसके अलावा; 2025-26 में आयोजित लोक अदालत द्वारा 246 मामलों में 4.34 करोड़ रुपए से अधिक का आपसी समाधान लाकर समस्या सुलझाई गई है। लोक अदालत एक ऐसा मंच है, जहाँ पंचायत से पहले लंबित मामलों अथवा कानून की अदालत में प्री-लिटिगेशन स्टेज पर निपटान किया जाता है।

राज्य सरकार द्वारा शुरू की गई हेल्पलाइन द्वारा 22700 से अधिक उपभोक्ताओं को मिला मार्गदर्शन

गुजरात में उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों के विषय में शिक्षित करने तथा राज्य में न्यायी व्यापार प्रथाओं को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार ने उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन पोर्टल ई-जागृति तथा 1915 हेल्पलाइन के अलावा; राज्य स्तर पर उपभोक्ताओं से जुड़ी शिकायतों के लिए राज्य सरकार का हेल्पलाइन नंबर 14437 कार्यरत है, जिसमें उपभोक्ताओं को उनसे जुड़ी शिकायतों के विषय में मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। यह हेल्पलाइन अक्टूबर, 2024 से शुरू की गई है, जिसके अंतर्गत अब तक 22700 से अधिक उपभोक्ताओं को सहायता प्रदान की गई है।

भरूच में मनाया गया 'विकास उत्सव' : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भरूच जिले को 1350 करोड़ रुपए के 139 विकास कार्यों की सौगात दी

- **भरूच से मुख्यमंत्री ने अंकलेश्वर-राजपीपला हाईस्पीड कॉरिडोर और एयर स्ट्रीप फेज-2 सहित कई मेगा परियोजनाओं का शिलान्यास किया**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ऐसा सुदृढ़ आयोजन किया है, जिससे विकास कार्यों के लिए धन की कभी कमी न हो : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल**

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- वर्ष 2001 में राज्य का बजट 36 हजार करोड़ रुपए था, जो आज 4 लाख करोड़ रुपए को पार कर गया है
- भरूच में नए जिला स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स से 2 लाख से अधिक युवाओं के सपने साकार होंगे
- दुनिया में ग्लोबल केमिकल हब के रूप में विख्यात भरूच जिले के जंबूसर में 1 हजार एकड़ में आकार ले रहा है देश का पहला बल्क ड्रग्स पार्क
- **1248.57 करोड़ रुपए के 73 विकास कार्यों के शिलान्यास और 102 करोड़ रुपए के 66 विकास कार्यों के लोकार्पण सहित कुल 1350 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की भेंट**
- **आवेदकों को सरल और सुगम प्रशासनिक सेवाएं मुहैया कराने के लिए राजस्व विभाग द्वारा 1.17 करोड़ रुपए के खर्च से नवीनीकृत 4 जनसेवा केंद्रों का लोकार्पण**
- **नर्मदा परिक्रमार्थियों के लिए 8 विश्राम हॉल और ग्रामीण स्तर पर 64 नए पंचायत घरों की भेंट**

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को भरूच जिले के सर्वांगीण विकास को नई गति देते हुए 1248.57 करोड़ रुपए के 73 विकास कार्यों का शिलान्यास और 102 करोड़ रुपए के 66 विकास कार्यों का लोकार्पण कर भरूच के नागरिकों को कुल अनुमानित 1350.68 करोड़ रुपए की 139 विकास परियोजनाओं की भेंट दी। इस मौके पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने ऐसा सुदृढ़ आयोजन किया है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोड नेटवर्क, कृषि और उद्योग जैसे विकास के किसी भी कार्य के लिए धन की कभी कमी न हो।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के डेवलपमेंट मिशन के माध्यम से इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर एक्सीलेंस तक और प्लेग्राउंड से लेकर प्लग एंड प्ले तक का समग्र विकास हो रहा है, तब शहरों और जिलों में जनप्रतिनिधियों की नए विकास कार्यों की भावनाओं और मांगों को पूरा करने के लिए राज्य सरकार सदैव तत्पर है।

भरूच के झाड़ेश्वर स्थित स्वामीनारायण मंदिर परिसर में स्वास्थ्य राज्य मंत्री और भरूच जिला प्रभारी मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया एवं जलापूर्ति राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल की विशेष उपस्थिति में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि भरूच जिले में आज बड़ी लागत वाली जिन परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है, उससे नागरिकों के ईज ऑफ लिविंग यानी जीवन जीने की सुगमता में उल्लेखनीय सुधार होगा। इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर शिक्षा और स्वास्थ्य तक के सभी क्षेत्रों में हुए ये कार्य भरूच के विकास में अहम साबित होंगे।

मुख्यमंत्री ने अतीत के विकट दिनों की याद दिलाते हुए कहा कि 1960 में जब गुजरात एक अलग राज्य बना था, तब संसाधनों की कमी थी, दूर-दूर तक विकास की संभावना दिखाई नहीं देती थी। लेकिन, 2001 से श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की जो राजनीति शुरू की, उससे राज्य आज आत्मनिर्भर बन गया है। वर्ष 2001 में राज्य का बजट केवल 36,000 करोड़ रुपए था, जो आज बढ़कर 4 लाख करोड़ रुपए के पार हो गया है।

औद्योगिक हब के रूप में उभरे भरूच के विकास को और अधिक तेजी देने के साथ ही भरूच की एयर और रोड कनेक्टिविटी को बढ़ान के लिए मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए कहा कि भरूच, अंकलेश्वर, दहेज और सायखा जैसे औद्योगिक क्षेत्रों को वैश्विक स्तर पर जोड़ने के लिए अंकलेश्वर में एयरपोर्ट डेवलपमेंट का काम शुरू किया गया है। अंकलेश्वर-राजपीपला की 44 किमी लंबी सड़क को 760 करोड़ रुपए की लागत से हाई-स्पीड कॉरिडोर में अपग्रेड करने का काम शुरू हो चुका है। इससे स्टैच्यू ऑफ यूनिटी तक पहुंचना और भी आसान हो जाएगा। लॉजिस्टिक्स सुविधा के लिए भरूच-दहेज रोड को एक्सेस कंट्रोल एक्सप्रेस-वे बनाने का काम भी जोरों से चल रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि कभी भरूच जिला पंचायत का बजट 300 करोड़ रुपए था, जबकि आज एक ही दिन में जिला पंचायत 309 करोड़ रुपए के कार्यों की भेंट दे रही है। विकास की राजनीति और जनहित के विजन का यह जीवंत उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि 'खेलो इंडिया' और 'फिट इंडिया' जैसे अभियानों को गति देने के उद्देश्य के साथ भरूच में नए जिला स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के जरिए 2 लाख से अधिक युवाओं का सपना साकार होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि 2030 मे जब अहमदाबाद में कॉमनवेल्थ गेम्स आयोजित होने जा रहे हैं, तब ऐसे स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स प्रतिभाशाली नौजवानों को बेहतर प्लेटफॉर्म प्रदान करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दुनिया में ग्लोबल केमिकल हब के रूप में विख्यात भरूच जिले के जंबूसर में एक हजार एकड़ क्षेत्र में देश का पहला बल्क ड्रग्स पार्क आकार ले रहा है। भरूच, नेत्रंग, राजपारड़ी और जंबूसर में 50 करोड़ रुपए के खर्च से बनने वाला कॉमर्शियल शॉपिंग सेंटर सह रेस्ट हाउस स्थानीय व्यापार और आगंतुकों के लिए वरदान साबित होगा। मां नर्मदा की परिक्रमा करने वाले लाखों श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए भरूच और झगड़िया में 8 अलग-अलग स्थानों पर विश्राम हॉल के निर्माण से श्रद्धालुओं के लिए परिक्रमा करना और भी आरामदायक बन जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने भरूच को ग्रोथ हब के रूप में सूरत इकोनॉमिक रीजन हब में शामिल किया है और इसके रोड इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए हाल ही में 1185 करोड़ रुपए स्वीकृत किए हैं। डबल इंजन सरकार के प्रयासों से विकास की गति के डबल होने का उल्लेख करते हुए उन्होंने सभी लोगों से 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' का संकल्प साकार करने में योगदान देने का आह्वान किया। भरूच के सांसद श्री मनसुखभाई वसावा ने भरूच जिले में अवैध रेत खनन को रोककर भूमाफियों के खिलाफ सरकार द्वारा की गई कठोर कार्रवाई की प्रशंसा की और कहा कि इस कार्रवाई के दौरान वसूली गई जुर्माने की राशि से भरूच जिले के विकास कार्यों में आर्थिक सहयोग मिल रहा है, जिसका सीधा लाभ आम नागरिकों को मिल रहा है। इसके साथ ही, भरूच जिले की आंतरिक सड़कों और हाईवे का काम भी बहुत सटीकता और तेजी से हो रहा है। इस इंफ्रास्ट्रक्चर सुविधा के कारण जिले के औद्योगिक क्षेत्रो के विकास और विस्तार को गति मिली है। गुजरात के स्वास्थ्य राज्य मंत्री और भरूच जिला के प्रभारी मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया ने अपने संबोधन में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे अविरत विकास कार्यों की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकास की असली परिभाषा गुजरात में शुरू की थी, जिसे आज मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की अगुवाई में ग्राम पंचायत के सरपंच से लेकर सांसद तक सभी चुने हुए जनप्रतिनिधि आगे बढ़ाकर जिले के विकास में योगदान दे रहे हैं।

श्री पानशेरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के जरिए दुनिया को वसुधैव कुटुंबकम और बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय का नारा दिया है, जिसे राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सही मायनों में चरितार्थ कर रहे हैं। सरकार हमेशा अंत्योदय के हित में काम कर रही है और यह सुनिश्चित करने की दिशा में काम कर रही है कि प्रत्येक योजना का लाभ असली लाभार्थी तक पहुंचे।

जिला पंचायत अध्यक्ष श्री महेन्द्रसिंह वांसदिया ने स्वागत भाषण में कार्यक्रम की रूपरेखा दी और जिले में हो रहे विकास कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को सहायता वितरित की गई। कार्यक्रम में जलापूर्ति और जल संसाधान राज्य मंत्री श्री ईश्वरसिंह पटेल, विधायक सर्वश्री रमेशभाई मिस्त्री, अरुणसिंह राणा, रितेशभाई वसावा, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती विभूतिबा यादव, जिला कलेक्टर श्री गौरांग मकवाणा, जिला विकास अधिकारी श्री योगेश कापसे, सड़क एवं भवन विभाग के मुख्य अभियंता श्री सी.पी. पटेल, जिले के अग्रणी श्री प्रकाशभाई मोदी, पूर्व सांसद श्री भरतसिंह परमार, पूर्व विधायक श्री दुष्यंतभाई पटेल, श्री मारुतिसिंह अटोदरिया, जिला पंचायत के जनप्रतिनिधियों सहित जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी और बड़ी संख्या में जिले के नागरिक मौजूद रहे।

सूरत की चरागाह भूमि की बिक्री से गायें आवारा घूम रही हैं और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए गंभीर समस्या खड़ी हो गई है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत का भौगोलिक विस्तार लगातार बढ़ रहा है। सूरत का भूगोल बदल रहा है। इसका कारण
वे गाँव हैं जो बढ़ते हुए सूरत में शामिल हो रहे हैं और नए गाँव बन रहे हैं, और यह कहना गलत नहीं होगा कि सूरत एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

लेकिन शर्मनाक बात यह है कि निगमित गांवों और उनमें स्थित चरागाहों को
ग्राम प्रशासक स्वयं बड़े-बड़े लोगों या राजनीतिक विचारधारा वाले बिल्डरों को बेच रहे हैं।
हिंदू राष्ट्र की प्रशंसा करने वाले और उनका समर्थन करने वाले भ्रष्ट शासकों की प्रशंसा करने वाले इन हिंदुत्ववादी ठेकेदारों के लिए इससे ज्यादा शर्मनाक क्या हो सकता है
? जहां चरागाह बेचना और चरागाह लेना अपराध है,
वहां भी खरीदार और विक्रेता दोनों ही अपराधी हैं।

बिल्डरों ने गायों के चरागाह को अपने कंधों पर उठा लिया

एक ओर, कुछ ग्रामीण प्रशासकों और अधिकारियों के कारण गांवों की चरागाह भूमि
बेची जा रही है, वहीं दूसरी ओर, शहरों की सड़कों पर आवारा गायें घूमती रहती हैं, जिससे पैदल चलने वालों की जान को खतरा होता है।
वहीं दूसरी ओर, ऐसी ही गाय को बचाने की कोशिश में वाहन चालक गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं या उनकी मृत्यु हो जाती है। कई मामलों में,
गाय की मृत्यु की खबर अखबारों में भी छपी है।
प्रशासन से नागरिकों की लगातार शिकायतों के बावजूद कोई समाधान नहीं निकला है।
इसका मुख्य कारण यह है कि गायों के लिए बनाए गए चरागाह बेचे जा रहे हैं, जिसके कारण गायें गरीब हो जाती हैं और अपना पेट भरने के लिए सड़कों पर पड़े कचरे या कूड़े के ढेर में जाकर प्लास्टिक खाने को मजबूर हो जाती हैं।
एक ओर हम कहते हैं कि चींटियाँ अनाज के समान होती हैं और हाथी पत्थर के समान, लेकिन यहाँ,
इन भूखी और असहाय गायों का ऐसा सौभाग्य नहीं है, इसलिए माँ गाय अपना पेट भरने के लिए सड़क पर पड़े कचरे या कूड़े को खाने को मजबूर है।
इस प्रकार, गाँव के तथाकथित प्रशासकों
द्वारा राजनीतिक दिग्गजों की मदद से गाँव की चरागाह भूमि को खरीदे जाने के कारण , गायों के लिए चारे की कमी हो गई है।
जब भूख और प्यास से भटकती ये गायें दूध देना बंद कर देती हैं, तो पशुपालक भी उन्हें सड़क पर छोड़ देते हैं। क्योंकि उनके पास दूध न देने वाली गायों के लिए चारा नहीं होता या फिर वे गायें अनाथ होकर सड़क पर भटकने लगती हैं।
कुछ लालची आवारा लोग इसका फायदा उठाते हैं। और ऐसे लोग
रात में तिपहिया या चार पहिया वाहनों में आते हैं और अनाथ गायों को उठाकर कसाईखाने में बेच देते हैं।
तो यहाँ सवाल उठता है कि एक तरफ हम गौभक्तों और हिंदू राष्ट्र की बात करते हैं, वहीं दूसरी तरफ अपने ही देश में खुलेआम गायों की हत्या होते देख हम घोर चुप्पी साधे रहते हैं। ऐसे में
गाय को राष्ट्रीय पक्षी मोर की तरह पवित्र और पूजनीय राष्ट्रीय गौमाता घोषित क्यों नहीं किया गया है ? सरकार ऊपर से नीचे तक दोहरी प्रणाली वाली होने के बावजूद गौहत्या के लिए कोई कानून क्यों नहीं बनाया गया है?
अब मुख्य मुद्दे पर आते हैं, कलेक्टर को कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए और उन सभी गांवों के भूमि खरीदारों और विक्रेताओं से जमीनें वापस ले लेनी चाहिए जिनकी चरागाह भूमि बेची गई है और सरकार को उन जमीनों को वापस लेना चाहिए। और ऐसी जमीनों पर दबाव कम करके ऐसे विक्रेताओं और खरीदारों पर किसी प्रकार की पाबंदी क्यों नहीं लगाई जानी चाहिए? उनके खिलाफ कार्रवाई करना और उन्हें जेल भेजना जरूरी है। क्योंकि चरवाहों और आवारा गायों को पकड़ने गए पुलिसकर्मियों के बीच झड़पों जैसी गंभीर घटनाओं का मूल कारण
भी चरागाह भूमि की बिक्री ही है। और अंत में, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि चरागाह भूमि पर चरने वाले सांडों को पिंजरे में बंद कर दिया जाए और कलेक्टर को चरागाह भूमि को खोलकर
सरकार और ग्रामीणों के सहयोग से हरी घास और मुलायम घास लगाने की योजना बनानी चाहिए और चारे का उत्पादन शुरू करना चाहिए। और
गौशालाओं में ऐसी घास उपलब्ध कराने से सड़कों पर भटकती गायों की भूख की समस्या का समाधान हो जाएगा, और सड़कों पर भटकते पशुओं का कष्ट समाप्त हो जाएगा, जिससे न तो गायों की मृत्यु होगी और न ही मनुष्यों की। गायों को वधशाला जाने से बचाया जा सकेगा। यहाँ केवल कलेक्टर और सरकार को अपनी तंदुरुस्ती दिखानी होगी, चरागाहों को साफ करने के लिए मैदान में उतरना होगा और
सच्ची गौसेवा का एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। सूरत शहर और जिले में उन सभी चरागाहों का तत्काल सर्वेक्षण किया जाना चाहिए जिन पर अवैध रूप से अतिक्रमण किया गया है , यथासंभव अधिक से अधिक खुली जमीनों पर नियंत्रण स्थापित किया जाना चाहिए, और जिला कलेक्टर को गायों के हित में दबाव डालकर बेची गई या अतिक्रमण की गई चरागाहों की बिक्री को रद्द करने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए।

छगनलाल मेवाड़ा बनाम सूरत उमरवाड़ा जमीन कब्जा और नरेश अग्रवाल मामला

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत शहर, उमरवाड़ा, शहर सर्वेक्षण संख्या 2177, टीपी योजना संख्या 8 (उमरवाड़ा), अंतिम भूखंड संख्या 83, जिसका क्षेत्रफल 11209 वर्ग मीटर है। इस स्थल के मूल स्वामी-कब्जेदार, ज़ारवाद मुल्तानी पंच कब्रिस्तान ट्रस्ट के न्यासियों ने 3/12/2014 के एक समझौता ज्ञापन के माध्यम से छगनलाल डी. मेवाड़ा को स्वामित्व अधिकार सौंप दिए थे और तब से छगनलाल मेवाड़ा इस स्थल के स्वामी-प्रशासक के रूप में इसका प्रबंधन कर रहे हैं। इस जमीन पर कब्जा करने के लिए नरेश अग्रवाल नामक व्यक्ति ने अपराध किया है और उसने सूरत शहर के वर्तमान कलेक्टर छगनलाल मेवाड़ा और सौरभ परधी के खिलाफ गुजरात भूमि हड़पने (निषेध) अधिनियम, 2020 के प्रावधानों के तहत किसी भी तरह से जमीन पर कब्जा किया है। 29/07/2025 को, भूमि हड़पने समिति ने
छगनलाल मेवाड़ा का पक्ष सुने बिना ही गलत तरीके से, नरेश अग्रवाल के पुत्र हेमंत नरेश अग्रवाल, निवासी श्याम आवास भातर रोड, सूरत को उनके नाम पर नियुक्त कर दिया। 29/07/2025 को, सूरत के कलेक्टर द्वारा छगनलाल मेवाड़ा को उनके प्रतिनिधि के साथ भूमि हड़पने समिति के समक्ष पेश किया गया। छगनलाल मेवाड़ा अपने वकील के माध्यम से भूमि हड़पने समिति के समक्ष उपस्थित हुए और अपना पक्ष रखा। लेकिन भूमि हड़पने की समिति, मानो भंग हो चुकी हो, ने छगनलाल मेवाड़ा और उनके वकील की बात पाँच मिनट तक भी संतोषजनक ढंग से नहीं सुनी और समिति के सदस्यों ने यह कहते हुए मामले को सुनने से इनकार कर दिया कि उन्हें इसकी जानकारी है। उस दिन उपस्थित सभी पक्ष कलेक्टर कार्यालय के बाहर बैठे थे। इससे क्या संकेत मिलता है कि सूरत कलेक्टर के कार्यालय में केवल हेमंत अग्रवाल, नरेश अग्रवाल और नटवर मुरलीलाल हरलालका ही एसी कार्यालय में बैठे थे? जब सभी पक्ष बाहर बैठकर अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे, तो समिति को हेमंत अग्रवाल में क्या दिलचस्पी थी? और 07/08/2025 को छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ भूमि हड़पने का मामला दर्ज करने का आदेश दिया गया।गरवी गुजरात 1 1

शून्य त्रुटि एजेंसी

छगनलाल मेवाड़ा ने ज़ारवाद मुल्तानी पंच मस्जिद स्थल के ट्रस्टियों के साथ एक समझौते के माध्यम से कानूनी रूप से भूमि पर कब्जा

प्राप्त कर लिया है, यह तथ्य साक्ष्य सहित भूमि हड़पने वाली समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया है, सभी साक्ष्य उपलब्ध कराए गए हैं, और भूमि के मूल मालिकों ने भूमि हड़पने के संबंध में कोई शिकायत दर्ज नहीं की है, तो छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ किसी तीसरे पक्ष द्वारा शिकायत दर्ज करने का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि छगनलाल मेवाड़ा हेमंत अग्रवाल को नहीं जानते हैं, तो क्या वे उन्हें जानते हैं या नरेश अग्रवाल को नहीं जानते हैं? इस प्रकार, भूमि हड़पने वाली समिति ने हेमंत नरेश अग्रवाल के साथ मिलीभगत करके गलत तरीके से मामला दर्ज किया है। जिसके कारण छगनलाल मेवाड़ा को जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय का सहारा लेना पड़ा। छगनलाल मेवाड़ा द्वारा 12/08/2025 को सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अनुमति अपील (आपराधिक) (एस) 11907/2025 दायर की गई थी। कलेक्टर के दिनांक 16/07/2025 के नोटिस पर निषेधाज्ञा जारी की गई है। उमरवाड़ा स्थित इस भूमि के संबंध में, नरेश अग्रवाल (कुबेरजी एंटरप्राइज) के साझेदार नटवरलाल मुरलीलाल हरलालका ने उमरवाड़ा स्थित उपरोक्त भूमि का कब्जा लेने के लिए सूरत के प्रधान वरिष्ठ सिविल न्यायाधीश की अदालत में पुलिस सुरक्षा की मांग की थी। अदालत ने फैसला सुनाया कि यदि कब्जे के आधार पर मांग नहीं की गई है, तो उस भूमि का कब्जा सौंपने के लिए पुलिस सुरक्षा नहीं दी जा सकती। तदनुसार, 20/07/2018 को याचिका संख्या 20/2015 खारिज कर दी गई। इस प्रकार, उपरोक्त अदालत का आदेश इस तथ्य को सिद्ध करता है कि नरेश अग्रवाल और नटवरलाल हरलालका इस भूमि पर कब्जे में नहीं थे। उमरवाड़ा स्थित इस भूमि को सूरत के कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर के कार्यकाल के दौरान गलत तरीके से एनए (गैर-कानूनी घोषित) करने की अनुमति दी गई थी। इस भूमि को एनए घोषित करने से पहले आवेदन से पहले विभिन्न विभागों की राय ली गई थी। साथ ही, नियमों के अनुसार, एनए अनुमति उस स्थिति में नहीं दी जा सकती जहां एनए अनुमति से पहले कोई अदालती मामला लंबित न हो। इस भूमि पर अदालती मामला चल रहा होने के बावजूद एनए अनुमति दी गई थी। और एक हलफनामा प्रस्तुत किया गया है कि कोई भी अदालती मामला लंबित नहीं है। इस दौरान, नामदार राजस्व विभाग में एक पुनरीक्षण आवेदन लंबित था, नामदार गुजरात उच्च न्यायालय में एक मामला लंबित था और गन्नोट कार्यवाही के कारण प्राप्त कृषि भूमि को केशवभाई घुसाभाई रामोलिया ने पुराने स्वरूप में वितरित करने की कार्रवाई करने के बाद बेच दिया था। नामदार सिविल न्यायालय में पुनरीक्षण ज्ञापन संख्या 288/2014 के तहत एक दावा था। उप कलेक्टर के समक्ष एक लंबित मुकदमा दर्ज किया गया है, माननीय सर्वोच्च न्यायालय में याचिका संख्या 4096/2015 दायर की गई है। केशवभाई घुसाभाई रामोलिया ने 15/06/2013 को एनए अनुमति प्राप्त करने के लिए एक हलफनामा प्रस्तुत किया था कि वह किसी भी दीवानी मुकदमे, अन्य प्रकार के मुकदमे में नहीं हैं और किसी भी प्रकार का कोई विवाद किसी भी प्राधिकरण/अधिनियम, न्यायाधिकरण या न्यायालय में लंबित नहीं है। लंबित अदालती मामलों के बावजूद और इस संबंध में तत्कालीन कलेक्टर को लिखित शिकायत के बावजूद, कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर ने एनए अनुमति नहीं दी है और न ही अनुमति रद्द की है। रामोलिया केशवभाई घुसाभाई ने गैर-कृषि क्षेत्र के लिए अनुमति हेतु आवेदन किया है। 15 इंद्रप्रस्थ सोसाइटी, मागोब ने 15/03/2014 को आवेदन किया था। एनए अनुमति देने से पहले, सरकार के विभिन्न विभागों की राय प्राप्त की जाती है। कलेक्टर कार्यालय से दिनांक 16/09/2011 को पत्र संख्या LAQ/Vashi/2386 के माध्यम से राय मांगी गई थी। गनोट शाखा से दिनांक 16/01/2013, उप कलेक्टर नगर प्रांत सूरत से दिनांक 13/12/2011, मामलतदार नगर से दिनांक 14/11/2011, जिला आपूर्ति अधिकारी से दिनांक 27/09/2011, सहायक नगर योजनाकार/शहरी विकास प्राधिकरण से दिनांक 17/06/2011 के पत्रों से यह स्पष्ट होता है कि जब आवेदक ने 15/03/2014 को एनए अनुमति के लिए आवेदन किया था, तो उपर्युक्त विभिन्न विभागों की राय 3 वर्ष पहले सरकार को कैसे प्राप्त हुई? यह तथ्य साबित करता है कि कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर ने भ्रष्टाचार किया और एनए (नेशनल लाइसेंस) की अनुमति दी, जिसे रद्द किया जाना चाहिए। इस गलती के संबंध में कलेक्टर जयप्रकाश शिवहर के खिलाफ सरकार के समक्ष शिकायत दर्ज कराई गई है। सरकार ने अनुरोध के अनुसार सबूत भी प्रस्तुत कर दिए हैं। नरेश अग्रवाल ने लोगों की जमीनों के लिए जो पैसा खरीदा था, उसका भुगतान नहीं किया है, इसमें कई एनआरआई भी शामिल हैं। नरेश अग्रवाल ने अपने साझेदारों को भी रिहा नहीं किया है और इस सब पैसे का भुगतान न करने और विरोधियों पर दबाव बनाने के लिए, उन्होंने सरौली स्थित भारत कैंसर अस्पताल के पास कुबेरजी वैलेंटाइन प्रोजेक्ट के कार्यालय में अफीम की गोलियां खाकर आत्महत्या कर ली। इससे काफी हंगामा मच गया। 29/09/2023 को, अफीम की गोलियां खाने वाले कुबेरजी ग्रुप के बिल्डर नरेश अग्रवाल ने छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ 5.41 मिनट का ऑडियो वायरल किया और छगनलाल मेवाड़ा के खिलाफ झूठी अफवाहें फैलाकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश की। छगनलाल मेवाड़ा राजस्थान के एक सम्मानित व्यापारी और सामाजिक नेता हैं। उन पर निराधार आरोप लगाकर उनके व्यापार और रोजगार को भारी नुकसान पहुंचाया गया है। साथ ही, इस दौरान उनके परिवार को भी मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ी है। नरेश अग्रवाल द्वारा लगाए गए झूठे आरोपों से उनके व्यापार पर भी असर पड़ा है। हेमंत नरेश अग्रवाल और भूमि हड़पने वाली समिति ने ऐसा कृत्य किया है जिससे मेवाड़ा में लोगों का विश्वास कम हो गया है। इससे पहले नरेश अग्रवाल के घर आयकर विभाग का छापा पड़ा था, लेकिन उनका इरादा जनता से ली गई रकम लौटाने का नहीं था। सूरत के मौजूदा कलेक्टर सौरभ परघी भी बेदाग हैं। उनके कार्यकाल की शुरुआत में ही सूरत शहर के दो हजार करोड़ रुपये के डुमा जमीन से जुड़ा एक मामला सामने आया था। इसके चलते जमीन हड़पने की समिति के खिलाफ झूठा मामला दर्ज कराने के आरोप में सरकार में शिकायत दर्ज कराई गई है। वहीं, छगनलाल मेवाड़ा ने नरेश अग्रवाल, हेमंत अग्रवाल और नटवरलाल हरलालका के खिलाफ मानहानि का मामला दर्ज कराया है।

‘विकसित गुजरात@2047’ के विजन के साथ श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग का वर्ष 2026-27 का 2902 करोड़ रुपए का ऐतिहासिक बजट : मंत्री श्री कुंवरजीभाई बावळिया

गांधीनगर, 14 मार्च : श्रम, कौशल विकास और रोजगार मंत्री श्री कुंवरजीभाई बावळिया ने रविवार को गांधीनगर में एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने युवाओं के कौशल विकास और श्रमिकों के सर्वांगीण कल्याण के लिए मजबूत संकल्प किया है। इस संदर्भ में श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग के लिए वर्ष 2026-27 के बजट में 2902 करोड़ रुपए की भारी धनराशि का प्रावधान किया गया है। इस प्रकार, यह बजट विकसित गुजरात के जरिए प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत@2047' और 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को साकार करने में अहम भूमिका निभाएगा।

श्रम, कौशल विकास और रोजगार विभाग के वर्ष 2026-27 के बजट के मुख्य मुद्दे इस प्रकार हैं :

नई योजनाएं एवं प्रावधान

▶▶ नमो गुजरात कौशल्य एवं रोजगार मिशन : युवाओं की रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए 226 करोड़ रुपए का प्रावधान।

▶▶ पीएम सेतु योजना : 200 करोड़ रुपए के खर्च से आईटीआई को हब-एंड-स्पोक मॉडल में अपग्रेड किया जाएगा।

▶▶ नमो कौशल्य लक्ष्मी योजना : आईटीआई में अध्ययनरत छात्राओं को प्रोत्साहन देने के लिए 40 करोड़ रुपए का आवंटन। 1 वर्ष के कोर्स के लिए 15,000 रुपए और 2 वर्ष के कोर्स के लिए 24,000 रुपए की सहायता दी जाएगी।

श्रमिक कल्याण की मौजूदा योजनाओं का विस्तार

▶▶ श्रमिक अन्नपूर्णा योजना : 200 करोड़ रुपए के आवंटन के साथ 300 नए अन्नपूर्णा बूथ शुरू करने का आयोजन है, जहां 5 रुपए में भोजन मिलता है।

▶▶ श्रमिक बसेरा योजना : निर्माण श्रमिकों को रियायती दरों पर रहने की सुविधा मुहैया कराने के लिए 150 करोड़ रुपए का प्रावधान।

▶▶ धन्वंतरि आरोग्य रथ : श्रमिकों की स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 50 और नए रथ शामिल करने के लिए 160 करोड़ रुपए का आवंटन।

▶▶ दुर्घटना बीमा : निर्माण श्रमिक की मृत्यु या स्थायी विकलांगता के मामले में 3.5 लाख रुपए की सहायता दी जाती है।

▶▶ अगरिया आवास योजना : नमक अगरियाओं (नमक उत्पादन करने वाले श्रमिक) के लिए सोलर पैनल और बुनियादी सुविधाओं युक्त आवासों के लिए 25 करोड़ रुपए का प्रावधान।

▶▶ सिलिकोसिस रोग से पीड़ित व्यक्तियों को निदान (डायग्नोसिस) के समय 3 लाख रुपए और मृत्यु के बाद 4 लाख रुपए की सहायता परिजनों को दी जाएगी।

विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धियां

▶▶ राज्य में संचालित कुल 559 आईटीआई में 2,18,516 सीटों की प्रशिक्षण क्षमता है, जिसमें महिलाओं के लिए 11,448 सीटें और दिव्यांगों के लिए 15 समर्पित आईटीआई संचालित हैं।

▶▶ वर्ष 2025-26 के अंतर्गत फरवरी-2026 तक 1215 भर्ती मेलों के जरिए 2,60,878 उम्मीदवारों को रोजगार के अवसर प्रदान किए गए।

▶▶ वर्ष 2023-24 के सर्वेक्षण के अनुसार भारत की 3.2 फीसदी बेरोजगारी दर के सापेक्ष गुजरात की दर केवल 1.1 फीसदी है।

▶▶ नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) द्वारा मान्यता प्राप्त 6 ड्रोन पायलट प्रशिक्षण केंद्रों को मंजूरी मिली है। कौशल्या-द स्किल यूनिवर्सिटी द्वारा 600 से अधिक ड्रोन पायलट और 1200 से अधिक प्रशिक्षुओं को ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग का प्रशिक्षण दिया गया है।

▶▶ मुख्यमंत्री स्किल डेवलपमेंट इनिशिएटिव्स के अंतर्गत वर्ष 2025-26 में कुल 4,27,861 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दिया गया है।

▶▶ राज्य में कारखाना अधिनियम 1948 के तहत मार्च-2025 के अंत तक पंजीकृत 50,017 कारखानों की संख्या फरवरी-2026 तक बढ़कर 51,033 हो गई है। इस प्रकार, पिछले एक वर्ष में कारखानों की संख्या में 1016 की वृद्धि हुई है।

▶▶ निदेशक, बॉयलर ने गुजरात राज्य में वर्ष 2025 के दौरान कुल 8447 बॉयलर और 339 इकोनोमाइजर का निरीक्षण करके उन्हें प्रमाणित किया। इसके अलावा, कुल 579 नए बॉयलरों और 10 इकोनोमाइजरों का पंजीकरण हुआ है। वर्ष के दौरान प्रमाणित बॉयलरों में कोई दुर्घटना नहीं हुई है।

भविष्य का लक्ष्य

▶▶ 'विकसित गुजरात@2047' के लक्ष्य को हासिल करने के लिए कौशल इकोसिस्टम को मजबूत बनाना।

▶▶ अगले 4-5 वर्षों में 60,000 से अधिक लोगों को प्रशिक्षण देने की योजना।

इस संवाददाता सम्मेलन में ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री संजयसिंह महिडा, ग्रामीण विकास सचिव श्री धनंजय द्विवेदी, श्रम, रोजगार और कौशल विकास सचिव श्री लोचन सेहरा, रोजगार एवं प्रशिक्षण निदेशक श्री नितिन सांगवान, श्रम आयुक्त श्री के.डी. लाखाणी सहित कई उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

नई दिल्ली में आयोजित एमआरओ एक्सपो इंडिया 2026 में गुजरात को ‘एमआरओ स्टेट ऑफ दी ईयर अवॉर्ड’ से सम्मानित किया गया

गुजरात अपनी प्रगतिशील नीतियों एवं रणनीतिक आयोजन के जरिए एमआरओ उद्योग के लिए भात में एक मॉडल स्टेट के रूप में उभरा

गांधीनगर : उड्डयन क्षेत्र में गुजरात की गौरव यात्रा में एक और मील का पत्थर जुड़ गया है। नई दिल्ली में आयोजित एमआरओ एक्सपो इंडिया 2026 (MRO Xpo India 2026) में गुजरात को प्रतिष्ठित ‘एमआरओ स्टेट ऑफ दी ईयर अवॉर्ड’ से सम्मानित किया गया है। विमान के रखरखाव, मरम्मत और ओवरहॉल (एमआरओ) इकोसिस्टम को मजबूत करने और श्रेष्ठ उड्डयन ढांचा खड़ा करने के लिए राज्य के सक्रिय प्रयासों को इस अवॉर्ड से वैश्विक पहचान मिली है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी के मार्गदर्शन में गुजरात अपनी प्रगतिशील नीतियों और रणनीतिक आयोजन के जरिए एमआरओ उद्योग के लिए भारत में एक मॉडल स्टेट के रूप में उभरा है। अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एमआरओ हैंगर के विकास में गुजरात स्टेट एविएशन इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी लिमिटेड (जीयूजेएसएआईएल-गुजसेल) का अहम योगदान है, जो एयरलाइंस और एमआरओ संस्थाओं को विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करती है।

सुविकसित एयरपोर्ट नेटरवक और कुशल मानवबल की उपलब्धता के कारण गुजरात एयरोस्पेस और विमान रखरखाव क्षेत्र में निवेशकों के लिए पसंदीदा स्थल बन गया है। यह अवॉर्ड उड्डयन और एयरोस्पेस क्षेत्रों में नवाचार और उद्योग सहयोग बढ़ाने की गुजरात सरकार की निरंतर प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए अधिकारियों ने कहा कि यह मान्यता भारत की उड्डयन क्षमताओं को मजबूत करने और गुजरात को ग्लोबल एविएशन हब के रूप में स्थापित करने के राज्य के विजन को और गति देगी।

गुजरात सरकार की ओर से गुजरात राज्य एविएशन इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी लिमिटेड ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर यह प्रतिष्ठित अवॉर्ड स्वीकार किया।

सूरत: श्री कंथा खंड मंडली में 15 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी, बैंक प्रबंधक समेत 3 आरोपी गिरफ्तार

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

सूरत जिले के ओलपाड तालुका के सरस गांव में स्थित श्री कंथा संभागीय सहकारी चीनी उद्योग समिति लिमिटेड में पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक जतिन नायक के खिलाफ समिति से 15 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करने के आरोप में ओलपाड पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज की गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, 17/11/2023 को समिति के पास चीनी का स्टॉक 4 हजार 22 क्विंटल होने के बावजूद, पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक ने भौतिक सत्यापन में चीनी का स्टॉक 59402 क्विंटल गलत तरीके से दिखाया और 22/11/2023 को राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) से समिति के खाते में 9,35,95,000 रुपये का ऋण प्राप्त किया। इसके अलावा, 19/06/2023 को 23800 क्विंटल चीनी स्टॉक पर 6,29,29,000 रुपये का ऋण लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप कुल ऋण राशि 10 लाख रुपये हो गई। अभियुक्तों द्वारा 15,65,24,000/- रुपये की राशि प्राप्त कर उसका दुरुपयोग किया गया, जो एक गंभीर अपराध है। (1) सोसायटी अध्यक्ष प्रदीपकुमार गौतमभाई पंड्या, वर्तमान में अंकलेश्वर, अंबेग्रीन सिटी, तहसील अंकलेश्वर, जिला भरूच निवासी। (2) प्रदीपकुमार भगुभाई पटेल, वर्तमान में 10, बेओनविला सोसायटी, डीमार्ट के पीछे, कैनाल रोड, जहांगीरपुरा, सूरत निवासी; मूल निवास सरसा गांव, तहसील ओलपाड, जिला सूरत। (3) जतिन ईश्वरभाई नायक, 4-रस्मेश्वरम रो-हाउस, गंगेश्वर मंदिर के पीछे, अडाजन, सूरत निवासी। इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है और इनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है। उपरोक्त तीनों अभियुक्तों ने आपस में मिलीभगत करके फर्जी स्टॉक स्लिप दिखाकर और जानबूझकर फर्जी होने के बावजूद उन्हें एनसीडीसी को प्रस्तुत करके, उन पर बड़ा ऋण प्राप्त किया और उसकी किश्तें न चुकाकर धन का गबन किया, जो एक गंभीर अपराध है। इस ऋण को प्राप्त करने में पीपुल्स कंपनी लिमिटेड बैंक के प्रबंधक जतिन नायक ने अहम भूमिका निभाई है। बैंक के माध्यम से फर्जी रसीदें बनाकर और भौतिक सत्यापन में गड़बड़ी होने के बावजूद उन्हें सही बताकर, बैंक प्रबंधक जतिन नायक ने एनसीडीसी को धोखा दिया है।

शून्य त्रुटि एजेंसी

सोसाइटी के अध्यक्ष और स्टोरकीपर कानून की जानकारी नहीं रखते, फिर भी उन्होंने अपराध में भाग लिया है। इसलिए वे अपराधी हैं। लेकिन पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक जतिन नायक, जिन्होंने इस अपराध को बढ़ावा दिया, कानून के जानकार हैं, पीएचडी तक की पढ़ाई कर चुके हैं और बैंक में उन्हें ढाई लाख रुपये प्रति माह वेतन मिलता है। इसके बावजूद यह कैसे उचित है कि सोसाइटी के पदाधिकारी सरकारी संस्था को इस तरह गुमराह करें और संस्था को धोखा देने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें? पीपुल्स को-ओ बैंक के प्रबंधक जतिन नायक ने और किन-किन कामों में गलतियाँ की हैं और इस फर्जी भौतिक सत्यापन में कौन-कौन से अन्य अधिकारी शामिल हैं? इसकी भी जांच होनी चाहिए।

उच्च अधिकारी के रूप में मिलने वाले सेवा के अवसर को वंचितों, अंतिम छोर के लोगों और जनसाधारण की सेवा करने के संवेदनशील अवसर के रूप में अपनाएं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2025 में सफल हुए स्पीपा के युवा उम्मीदवारों को सीख

▶▶ 2025 में सर्वाधिक सफल हुए 35 युवा उम्मीदवारों ने मुख्यमंत्री से की शिष्टाचार भेंट

▶▶ स्पीपा के यूपीएससी सिविल सेवा स्टडी सेंटर का लाभ उठाकर 34 वर्षों में 348 युवाओं ने सफलता हासिल की

▶▶ राज्य सरकार की ओर से संचालित स्पीपा दूसरे निजी संस्थानों की प्री-एग्जाम प्रशिक्षण क्लास के समकक्ष नतीजे देने वाला प्रतिष्ठित संस्थान बना

गांधीनगर : राज्य सरकार द्वारा संचालित सरदार पटेल लोक प्रशासन संस्थान (स्पीपा) में प्री-एग्जाम प्रशिक्षण प्राप्त करके संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की सिविल सेवा परीक्षा 2025 में सफलता प्राप्त करने वाले 35 युवाओं ने शनिवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से शिष्टाचार भेंट की। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इन युवाओं के साथ सहज संवाद करते हुए उन्हें भविष्य में उच्च अधिकारी के तौर पर मिलने वाले सेवा के अवसर को वंचितों, अंतिम छोर के लोगों और जनसाधारण की सेवा करने के संवेदनशील अवसर के रूप में अपनाने का प्रेरक मार्गदर्शन दिया। श्री भूपेंद्र पटेल ने उच्च प्रतिस्पर्धी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले इन युवाओं को उज्जवल करियर की शुभकामनाएं दीं और यह आह्वान किया कि वे सरकार और जनता के बीच सौहार्द बनाए रखें और राज्य सेवा से राष्ट्र सेवा का दायित्व ही उनकी प्राथमिकता रहे।

उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय सिविल सेवा में राज्य के युवाओं का प्रतिनिधित्व बढ़े और इसमें राज्य के युवा अधिक से अधिक संख्या में चयनित हों, इस उद्देश्य से गुजरात सरकार की ओर से 1992 में स्पीपा-अहमदाबाद में ‘यूपीएससी सिविल सेवा स्टडी सेंटर’ शुरू किया गया है। इस सेंटर के जरिए यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा (प्रीलिम्स), मुख्य परीक्षा (मेंस) और साक्षात्कार परीक्षण (इंटरव्यू) के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण क्लास संचालित की जाती है। यूपीएससी द्वारा ली गई सिविल सेवा परीक्षा 2025 में स्पीपा के सर्वाधिक कुल 35 उम्मीदवार अखिल भारतीय सेवा और केंद्रीय सिविल सेवा के लिए अंतिम रूप से चुने गए हैं।

1992 से वर्ष 2026 तक, यानी पिछले 34 वर्षों में स्पीपा अहमदाबाद से कुल 348 उम्मीदवार यूपीएससी सिविल सेवा में अंतिम रूप से चयनित होकर आईएएस, आईपीएस, आईएफएस और आईआरएस जैसे विभिन्न कैडरों में शामिल हुए हैं।

स्पीपा द्वारा यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की प्रशिक्षण क्लास में दी जाने वाली सुविधाएं

स्पीपा में यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा की प्रशिक्षण क्लास में नियमित व्याख्यान, ग्रुप डिस्कशन और मॉक टेस्ट के जरिए, तथा साक्षात्कार परीक्षण की प्रशिक्षण क्लास में व्याख्यान, ग्रुप डिस्कशन, वन-टू-वन इंटरव्यू और मॉक इंटरव्यू के माध्यम से गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा, स्पीपा की लाइब्रेरी में उम्मीदवारों के लिए यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक सभी प्रकार की पुस्तकें, मैगजीन और समाचार पत्र आदि जरूरी संख्या में होते हैं। उम्मीदवारों के पढ़ने के लिए वाचनालय की व्यवस्था भी उपलब्ध है।

इतना ही नहीं, प्रशिक्षुओं को संस्थान के नियमों और उपलब्धता के आधार पर हॉस्टल की सुविधा दी जाती है तथा उम्मीदवार तैयारी करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकें, इसके लिए निःशुल्क वाई-फाई की सुविधा भी दी जाती है।

राज्य सरकार द्वारा स्पीपा में यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए दी जाने वाली प्रोत्साहन-सहायता

यूपीएससी सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा की प्रशिक्षण कक्षाओं में प्रवेश लेने के बाद अधिक से अधिक सात महीने के लिए प्रतिमाह 2000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता, यूपीएससी सिविल सेवा की प्रारंभिक परीक्षा पास करने वाले युवक को 25,000 रुपए और युवती को 30,000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता दी जाती है। यूपीएससी सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा पास करने वाले युवक को 25,000 रुपए और युवती को 30,000 रुपए प्रोत्साहन सहायता तथा यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में अंतिम रूप से चयनित होने वाले गुजरात के डोमिसाइल युवक को 51,000 रुपए और युवती को 61,000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता, साथ ही गुजरात के नॉन डोमिसाइल युवक को 21,000 रुपए और युवती को 31,000 रुपए की प्रोत्साहन सहायता भी दी जाती है।

ऐसी अत्याधुनिक सुविधाओं के चलते स्पीपा से प्रशिक्षण प्राप्त उम्मीदवारों की सफलता दर लगातार बढ़ती जा रही है। इतना ही नहीं, राज्य सरकार द्वारा संचालित स्पीपा ने यूपीएससी जैसी उच्च परीक्षा के पूर्व प्रशिक्षण के लिए कोचिंग प्रदान करने वाले अन्य दूसरे संस्थानों के नतीजों के समकक्ष नतीजे हासिल करने की उपलब्धि प्राप्त की है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के साथ स्पीपा के सफल उम्मीदवारों की इस मुलाकात के दौरान स्पीपा के महानिदेशक श्री हारित शुक्ला, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे और स्पीपा के उप महानिदेशक श्री चंद्रेश कोटक भी मौजूद रहे।

पंजाब में ‘बदलाव’ का बिगुल : अमित शाह का वादा—भाजपा सरकार बनी तो दो साल में नशे की समस्या खत्म करेंगे

मोगा। पंजाब की राजनीति में आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर हलचल तेज होती जा रही है। इसी कड़ी में केंद्रीय गृह मंत्री Amit Shah ने राज्य में भारतीय जनता पार्टी के चुनावी अभियान का औपचारिक आगाज करते हुए बड़ा राजनीतिक संदेश दिया। मोगा जिले के किल्ली चाहलान गांव में आयोजित भाजपा की ‘बदलाव रैली’ को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पंजाब आज कई गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है, जिनमें नशे की बढ़ती लत सबसे बड़ी चुनौती बनकर सामने आई है। शाह ने दावा किया कि यदि राज्य में Bharatiya Janata Party की सरकार बनती है तो केवल दो वर्षों के भीतर नशे के कारोबार को जड़ से समाप्त करने का ठोस अभियान चलाया जाएगा।

रैली को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि पंजाब कभी देश के सबसे समृद्ध और मेहनतकश राज्यों में गिना जाता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यहां की स्थिति चिंताजनक हो गई है। उन्होंने कहा कि युवाओं में नशे की लत ने परिवारों को तोड़ दिया है और समाज को कमजोर बना दिया है। शाह ने कहा कि भाजपा पंजाब की जनता को यह भरोसा दिलाती है कि यदि राज्य में ‘डबल इंजन’ की सरकार बनती है, यानी केंद्र और राज्य दोनों जगह एक ही पार्टी की सरकार होगी, तो विकास की रफ्तार तेज होगी और नशे के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई की जाएगी।

उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पंजाब के युवाओं का भविष्य बचाना सरकार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। शाह ने दावा किया कि भाजपा की सरकार बनने पर पुलिस, खुफिया एजेंसियों और प्रशासनिक तंत्र को मजबूत बनाकर नशे के नेटवर्क को पूरी तरह तोड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि यह केवल कानून-व्यवस्था का मुद्दा नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण का भी सवाल है। भाजपा सरकार युवाओं को रोजगार, शिक्षा और बेहतर अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें नशे से दूर रखने का प्रयास करेगी।

अमित शाह ने अपने भाषण में राज्य की वर्तमान Aam Aadmi Party सरकार पर भी तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार ने पंजाब की जनता से बड़े-बड़े वादे किए थे, लेकिन सत्ता में आने के बाद उन वादों को पूरा नहीं किया। शाह ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने लोगों को उम्मीदें तो दीं, लेकिन शासन के स्तर पर अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाई। उनके अनुसार राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है और गैंगस्टरों का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है।

हरियाणा राज्यसभा चुनाव प्रभारी बनने पर हर्ष संघवी को बधाई, भ्रष्ट पुलिस अधिकारियों के तबादलों की मांग करें

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

गुजरातवासियों और पूरे गुजरात के लिए यह गर्व की बात है कि गुजरात विधानसभा के इतिहास में सबसे कम उम्र के उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री हर्ष संघवी को पूरे राज्य की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने के बावजूद हरियाणा राज्यसभा चुनाव के उम्मीदवारों के लिए राष्ट्रीय स्तर का प्रभारी नियुक्त किया गया है। विकास उपभोक्ता संरक्षण अनुसंधान केंद्र के दक्षिण गुजरात अध्यक्ष छगनलाल मेवाड़ा ने गुजरात की 6 करोड़ जनता की ओर से उन्हें बधाई देते हुए कामना की कि वे इसी तरह देश की सेवा करते रहें।

शून्य त्रुटि एजेंसी

अगर हम इसे इस नज़रिए से देखें, तो गृह मंत्री और उपमुख्यमंत्री दोनों की दो कार्यकाल की ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी है। गुजरात की सीमाओं से परे, 6 करोड़ लोगों की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी है। चाहे वह माताओं, बेटों और बेटियों की सुरक्षा हो या आपराधिक मानसिकता वाले असामाजिक तत्वों द्वारा ईमेल के ज़रिए उच्च न्यायालय, सत्र न्यायालय, विश्वविद्यालय, डाकघर, पासपोर्ट कार्यालय, धार्मिक स्थल, सरकारी कार्यालय आदि को बम से उड़ाने की लगातार धमकियाँ, इन सबके बावजूद गृह विभाग के सभी सक्षम अधिकारी अपनी जान और माल की परवाह किए बिना, साथ ही डॉग स्क्वाड और बम स्क्वाड सहित सभी कर्मचारी, हर जगह का निरीक्षण करते हैं और 6 करोड़ गुजरातियों को सुरक्षा प्रदान करते हैं। और ऐसे सक्षम अधिकारियों की बदौलत ही लोग चैन से सो पाते हैं। लेकिन सोने की थाली में लोहे की कील की तरह, कुछ भ्रष्ट और रिश्वतखोर अधिकारी पुलिस विभाग को बदनाम कर रहे हैं। सूरत शहर, ज़िला और तालुका जैसे पुलिस थानों में रोज़ाना होने वाली हत्याओं को देखते हुए, ऐसे भ्रष्ट और रिश्वतखोर अधिकारियों का तबादला लिंबायत, गोदादरा, डिंडोली, उधना, उन, भेस्तान, पांदेसरा, सचिन, सचिन जीआईडीसी आदि जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में कर दिया जाना चाहिए। तीन साल से एक ही जगह पर तैनात हेड कांस्टेबल से लेकर उच्च पदस्थ अधिकारियों तक, उनका तबादला शहर, ज़िला और तालुका के बजाय ज़िले में कर दिया जाना चाहिए। तीन साल से एक ही जगह पर तैनात रहने के कारण, स्थानीय शराब तस्कर, असामाजिक तत्व, ड्रग डीलर और अवैध व्यापारी, भू-माफिया और लोगों की ज़मीन हड़पने वाले, असली ज़मीन मालिक और असली किसान को झूठे अधिकार और फर्जी दस्तावेज़ दिए जाते हैं, किसानों और फ्लैट मालिकों की मृत्यु के बाद उनके फर्जी हस्ताक्षर करवाकर उन्हें उप-पंजीयक और नोटरी कहा जाता है। मिलीभगत से लोगों की संपत्तियां छीनी जाती हैं। ऐसे लोगों से घनिष्ठ संबंध बनाकर वे मिलीभगत से भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का पाप करते हैं। लंबे समय से एक ही जगह काम करते हुए उन्होंने अपराधियों की मिलीभगत से पुलिस से संबंध बना लिए हैं, इसलिए उन्हें पुलिस का कोई डर नहीं है। छोटी-छोटी बातों में, छोटे-मोटे लेन-देन में, यहाँ तक कि एक-दूसरे की गाड़ियों को ओवरटेक करने में भी, ये लंपट गुंडे मारपीट और हत्या, जबरन वसूली, अपहरण और सूदखोरों को यातना देते हैं, और उन्हें सरेआम तलवारों, छप्परों, चाकुओं, कोड़ों आदि से मार डालते हैं। पुलिस का उन्हें कोई डर नहीं है। शराब तस्कर और छोटे-बड़े अवैध व्यापारी, जिनकी आमदनी पुलिस कांस्टेबलों से लेकर उच्च अधिकारियों तक पहुँचती है, अपने-अपने इलाकों में भाईचारे और माफिया वाली मानसिकता का प्रदर्शन करते हुए अपनी मनमानी करते हैं। इसी वजह से सार्वजनिक हत्याएं बड़े पैमाने पर हो रही हैं, जिससे नागरिकों की सुरक्षा पर सवाल उठ रहे हैं। इसके साथ ही, छोटी बच्चियों का अपहरण कर उन्हें सुनसान स्थानों पर ले जाया जाता है, उनके साथ बलात्कार किया जाता है और उनकी हत्या कर दी जाती है। इससे स्कूली बच्चों की जान और माल खतरे में पड़ जाता है। इसलिए, गुजरात की छह करोड़ जनता की यह मांग है कि आगामी नगर निगम, जिला पंचायत और पंचायत चुनावों से पहले, अपराध विभाग के सभी अधिकारियों (जैसे एसओ, एलसीबी, स्पेशल ब्रांच, क्राइम ब्रांच, इको सेल) और स्थानीय पुलिस स्टेशनों के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अधिकारियों का तत्काल तबादला अलग-अलग जिलों में कर दिया जाए ताकि कोई अप्रिय घटना न घटे। यह गुजरात की छह करोड़ जनता की जन अपील है।

अन्नपूर्णा मंदिर का अन्न क्षेत्र बंद, रेस्त्रा में नहीं जले चूल्हे,एलपीजी की किल्लत से वाराणसी में भोजन व्यवस्था प्रभावित

वाराणसी। शहर में एलपीजी सिलेंडरों की कमी का असर अब धार्मिक और व्यावसायिक गतिविधियों पर भी दिखने लगा है। गैस की अनुपलब्धता के कारण शनिवार को बांसफाटक स्थित अन्नपूर्णा मंदिर के अन्न क्षेत्र को बंद रखना पड़ा, जिससे प्रसाद वितरण की व्यवस्था प्रभावित रही। मंदिर प्रबंधन के अनुसार, बांसफाटक स्थित अन्न क्षेत्र में गैस सिलेंडर उपलब्ध न होने के कारण यहां भोजन प्रसाद तैयार नहीं किया जा सका। ऐसे में वहां पहुंचे श्रद्धालुओं को कालिका गली स्थित अन्न क्षेत्र में भेजा गया, जहां सीमित संसाधनों के बीच प्रसाद वितरण की व्यवस्था जारी रखी गई। स्थानीय व्यापारियों का कहना है कि यदि जल्द ही एलपीजी की आपूर्ति सामान्य नहीं हुई तो होटल, रेस्टोरेंट और मंदिरों की भोजन व्यवस्था पर इसका और व्यापक असर पड़ सकता है।

श्रद्धालुओं ने इस स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा कि देश में एलपीजी की आपूर्ति जल्द सामान्य की जानी चाहिए, क्योंकि गैस सिलेंडर पर निर्भर भोजन प्रसाद की व्यवस्था बंद होना धार्मिक गतिविधियों को प्रभावित करता है।

एलपीजी की कमी का असर शहर के प्रसिद्ध खानपान व्यवसायों पर भी पड़ा है। बनारस की पहचान मानी जाने वाली कचौड़ी-जलबी की दुकानों में भी चूल्हे ठंडे रहे। कई स्थानों पर कचौड़ी नहीं बन सकी, जिससे सुबह नाश्ता करने पहुंचे लोगों को निराश होकर लौटना पड़ा।

बनारसी कचौड़ी के संचालक दीपक ने बताया कि पिछले दो दिनों से गैस सिलेंडर की भारी कमी बनी हुई है। बाजार में सिलेंडर ऊंचे दामों पर मिल रहे हैं, जिसके कारण कचौड़ी, सब्जी और जलेबी बनाने का काम अस्थायी रूप से बंद करना पड़ा है। उन्होंने कहा कि महंगे दामों पर सिलेंडर खरीदने से व्यापार में लाभ की संभावना समाप्त हो जाती है।

इसी तरह भेलूपुर स्थित Kerala Cafe में भी गैस की कमी के चलते खाना तैयार नहीं हो सका। यहां दक्षिण भारतीय व्यंजन—जैसे इडली, डोसा और सांभर—खाने पहुंचे लोगों को निराश होकर लौटना पड़ा। शहर के प्रमुख पर्यटन क्षेत्र Godowlia के आसपास स्थित कुछ बड़े होटलों के रेस्टोरेंट भी शनिवार को बंद पाए गए। इन होटलों में ठहरे यात्रियों के लिए बाहर से भोजन की व्यवस्था कराई गई।